A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 14 अक्टूबर, 2025
भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 46, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

न सुर रहेंगे न किताब होगी
न लफ़्ज़ होंगे न ज़बाँ रहेगी
न तोप होगी न तेग़ होगी
न तीर होंगे न कमाँ रहेगी
ज़ोर-ए-क़यामत कम ही होगा
क़यामत भी कब तक जवाँ रहेगी
अगर ये दुनिया बनेगी ऐसी
तब ये दुनिया कहाँ रहेगी
न अहसास होंगे न ज़ज़्बात होंगे
जिस्म के पत्थर लुढ़कते होंगे
न पहलू में कोई महबूब होगा
तमाम उम्र दूरियाँ रहेंगी !
अजल सुला देगी सबको आखिर
किसी बहाने थपक-थपक कर
न हम रहेंगे न तुम रहोगे
न शाद ये दास्ताँ रहेगी !

– शाद अज़ीमाबादी.

प्रसंगवश

कोल्ड्रिफ मौतें : भारत दुनिया की फार्मेसी, लेकिन देश में फेल

समृद्धि तिवारी

एक ऐसे देश में जो खुद को दुनिया की फार्मेसी कहता है, दवा शब्द में भरोसा होना चाहिए, लेकिन मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में, यह भरोसा दुख में बदल गया और फिर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खबरों और पहले पन्ने की सुर्खियां बन गया। पिछले महीने में, कम से कम 21 बच्चे मध्य प्रदेश में और राजस्थान में तीन अन्य, ज्यादातर पांच साल से कम उम्र के, कोल्डरिफ नाम के कफ सिरप का सेवन करने के बाद मौत के घाट उतर गए।

यह सिरप श्रीसन फार्मास्यूटिकल के तहत बनाया गया था और डॉक्टरों द्वारा वर्षों से बच्चों में खांसी और सामान्य सर्दी के इलाज के लिए दिया जाता रहा। लेकिन यह पहली बार नहीं है जब भारत में बना कोई सिरप ज़हरीली साबित हुआ हो। दिसंबर 2019 और जनवरी 2020 के बीच, जम्मू और कश्मीर में 12 बच्चे दूषित कफ सिरप पीने के बाद मरे। गाम्बिया में 2022 में 66 बच्चे भारतीय निर्मित सिरप पीने के बाद मरे, जिसमें डाइएथिलीन ग्लाइकोल (डीईजी) और एथिलीन ग्लाइकोल मिलाया गया था। अगले साल, उज्बेकिस्तान और इंडोनेशिया ने भी दर्जनों ऐसी मौतों की रिपोर्ट की। हर बार वही पैटर्न दोहराया गया–वही 'ज़हर', वही लापरवाही, और वही धीमी आधिकारिक प्रतिक्रिया।

कोल्डरिफ मौतें सिर्फ एक त्रासदी नहीं हैं। ये याद दिलाती हैं कि हर सिरप की बोतल के पीछे जिम्मेदारी की एक श्रृंखला होती है, जिसे अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाता है। यह सामूहिक उदासीनता भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र की संवेदनशीलता को कई स्तरों पर उजागर करती है।

मध्य प्रदेश में कुछ बुखार के मामले जैसे शुरू हुए, वे अब इस राष्ट्रीय गुस्से में बदल गए हैं कि कैसे नकली दवाएं आसानी से भारत के नियामक चक्रों से निकल जाती हैं।

त्रासदी का केंद्र राज्य के परासिया ब्लॉक में है, यह एक छोटा गो-क्षेत्र है जिसमें कोयला खदानें हैं, हरियाली से घिरे हिल्स के बीच, छिंदवाड़ा शहर से 30 किमी दूर। परिवार अस्पतालों से मीलों दूर रहते हैं। जिला अस्पताल तक एक ही सवारी के लिए एम्बुलेंस 5 से 6 हजार रू. चार्ज करती है। जिले के लोगों की एक हफ्ते की कमाई से ज्यादा है। चार साल के उसैद खान को कविताएं सुनाना पसंद था, जब अगस्त के अंत में उन्हें बुखार हुआ, उसके माता-पिता उसे डॉ. प्रवीण सोनी की स्थानीय क्लिनिक लेकर गए। डॉक्टर ने कोल्ड्रिफ का सिरप लिखकर दिया, जिसे हर माता-पिता पहचानते और भरोसा करते थे। कुछ ही दिनों में उसैद का शरीर सूज गया। वह पेशाब नहीं कर पा रहा था। उसके माता-पिता उसे छिंदवाड़ा और फिर नागपुर ले गए। उसकी किडनी फेल हो चुकी थी। उसका दिमाग सूज गया था। छोटी नसों पर डायलिसिस से पहले, उसने अपनी मां की ओर देखा और धीरे से कहा, 'अ' से अनार का मीठा दाना। कुछ घंटे बाद, वह मर गया।

उसैद अकेला नहीं था। पास के गांवों में दर्जनों बच्चे, जिनमें से कई उसी डॉक्टर के मरीज थे, को वही सिरप दिया गया था। उनके लक्षण भी समान थे, जब तक स्वास्थ्य अधिकारी हस्तक्षेप कर पाए, मौतें बढ़ चुकी थीं। पहली रिपोर्ट की गई मौत के एक महीने बाद किए गए टेस्ट में पता चला कि तमिलनाडु में निर्मित कोल्डरिफ सिरप (SR-13) के एक बैच में 48.6 प्रतिशत डीईजी था। यह ब्रेक फ्लुइड और एंटीफ्रीज़ में इस्तेमाल होने वाला रसायन है और सिरप में इसकी अनुमत सीमा 0.1 प्रतिशत है।

अब, फैक्ट्री के मालिक एस. रंगनाथन को मध्य प्रदेश की विशेष जांच टीम ने गिरफ्तार कर लिया है। राज्य सरकार ने लापरवाही के लिए कई अधिकारियों, जिसमें ड्रग इंस्पेक्टर शामिल हैं, को निलंबित किया है, लेकिन जवाबदेही वहीं रुक जाती है, जहां उसे शुरू होना चाहिए था। फैक्ट्री ने कुछ महीने पहले सुरक्षा जांच पास की थी और बच्चों की मौतें शुरू होने के बाद ही राष्ट्रीय स्तर पर सतर्कता आई। इस बीच, भारतीय मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. दिलीप भानुशाली ने डॉ. सोनी का बचाव करते हुए कहा, 'असल विफलता फार्मा कंपनियों और सरकार की है।'

वैश्विक निगरानी के बावजूद, घरेलू निरीक्षण कमज़ोर ही बना हुआ है। भारत की सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन 10 हजार से ज्यादा निर्माताओं की निगरानी करती है, लेकिन यह हमेशा ही स्टाफ की कमी से जूझती रही है। राज्य के ड्रग लैब्स अक्सर सामग्री और उनके मिश्रणों की समय पर जांच करने की क्षमता नहीं रखते। कई छोटी फार्मास्यूटिकल कंपनियां लागत बचाने के लिए औद्योगिक ग्रेड सॉल्वेंट का इस्तेमाल करती हैं, यह मानकर कि इंस्पेक्टर नज़रअंदाज़ करेंगे और कागज़ी कार्रवाई आसान होगी।

2024 की एक स्टडी में पाया गया कि लगभग 64 प्रतिशत भारतीय खुद दवा लेते हैं और इसकी सबसे अधिक दर उत्तर भारत में पाई गई। खांसी और सर्दी उन सबसे आम चीज़ों में थी जिनका इलाज बिना प्रिस्क्रिप्शन के किया जाता था, अक्सर स्थानीय केमिस्ट से सीधे खरीदे गए कफ सिरप और बुखार घटाने वाली दवाओं से। स्टडी में यह भी नोट किया गया कि ज्यादातर लोग डॉक्टरों की बजाय फार्मासिस्ट, पुराने पर्चों या परिवार की सलाह पर भरोसा करते हैं, आर्थिक प्रतिबंध और स्वास्थ्य सेवा की सीमित पहुंच को कारण बताते हुए। शोधकर्ताओं ने लिखा कि ओटीसी दवाओं का इतना ओवरडोज़, गलत डायग्नोज़ और संक्रमण का गंभीर खतरा पैदा करता है।

2025 में मैसूरू के JSS मेडिकल कॉलेज द्वारा किए गए हॉस्पिटल बेस्ड कम्युनिटी स्टडी में पाया गया कि 46 प्रतिशत माता-पिता पांच साल से कम उम्र के बच्चों का इलाज ओटीसी दवाओं से करते हैं. इनमें से 75 प्रतिशत ने कफ सिरप, 72 प्रतिशत ने बुखार घटाने वाली दवाएं और 58 प्रतिशत ने एंटीबायोटिक दवाएं इस्तेमाल की। शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी कि, खासकर बहुत छोटे बच्चों के लिए बिना निगरानी ओटीसी दवा का इस्तेमाल का यह पैटर्न स्वास्थ्य सेवा में अंतर और भारत में खुद से इलाज करने की खतरनाक सामान्य होती आदत दोनों को दर्शाता है।

केंद्र स्वास्थ्य मंत्रालय ने छह राज्यों में फार्मास्यूटिकल प्लांट्स की जोखिम-आधारित जांच का आदेश दिया है और कोल्ड्रिफ सहित कई सिरप ब्रांड्स को भी प्रतिबंधित कर दिया है, लेकिन ये कदम प्रतिक्रियात्मक हैं, न कि रोकथाम के लिए। भारत के फार्मास्यूटिकल सेक्टर का मूल्य 50 अरब डॉलर है। इसने अपनी पहचान किफायती और सुलभ दवाओं पर बनाई है, लेकिन छिंदवाड़ा की मौतें एक खतरनाक विडंबना को उजागर करती हैं। भारत कई देशों को जीवन रक्षक दवाएं निर्यात कर रहा है, जबकि अपने ही शहरों में बच्चे ऐसी दवाओं से मर रहे हैं, जो बुनियादी जांच में फेल हो गई हैं।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

अमेरिका के पोर्टलैंड में ट्रम्प प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन

पोर्टलैंड (एजेंसी)। ट्रम्प प्रशासन के खिलाफ अमेरिका के पोर्टलैंड में लोगों ने अनोखा विरोध किया। सैकड़ों लोग बिना कपड़ों या बेहद कम कपड़ों में साइकिल लेकर सड़कों पर उतर आए। बारिश और ठंड के बीच यह रैली 'वर्ल्ड नेकेड बाइक राइड' के तहत निकाली गई। यह सालाना राइड आमतौर पर गर्मियों में होती है। लेकिन इस बार इसे ट्रम्प के नेशनल गार्ड भेजने फैसले के विरोध में निकाला गया। ट्रम्प ने विरोध प्रदर्शनों को शांत करने के लिए नेशनल गार्ड भेजने की बात कही थी। रैली में शामिल 51 साल की जेनीन किंग ने कहा कि हम नहीं चाहते कि हमारे शहर में सैनिक आएं, यह पोर्टलैंड का तरीका है विरोध जताने का। साइकिल सवार आईसीई (इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एन्फोर्समेंट) दफ्तर तक पहुंचे। ठंड और बारिश के बावजूद कई लोग बिना कपड़ों के साइकिल चलाते दिखे। पोर्टलैंड में 2004 से हर साल यह 'नेकेड बाइक राइड' होती है और अब यह शहर की पहचान बन चुकी है।

कोल्ड्रिफ बनाने वाली श्रीसन फार्मा हमेशा के लिए होगी बंद, लाइसेंस रद्द

- चेन्नई में कंपनी के ठिकानों पर ईडी की रेड, इसके सिरप से एमपी में 25 बच्चों की मौत हुई

चेन्नई (एजेंसी)। मध्य प्रदेश पुलिस ने कोल्ड्रिफ कफ सिरप बनाने वाली श्रीसन फार्मा के मालिक रंगनाथन गोविंदन को 9 अक्टूबर को गिरफ्तार किया था।

तमिलनाडु सरकार ने सोमवार को कोल्ड्रिफ कफ सिरप बनाने वाली श्रीसन फार्मास्यूटिकल्स का मैन्युफैक्चरिंग लाइसेंस पूरी तरह से रद्द कर दिया। साथ ही कंपनी को हमेशा के लिए बंद करने की घोषणा की। सरकार को श्रीसन फार्मा की फैक्ट्री में 350 से ज्यादा गंभीर श्रेणी की गड़बड़ियां मिली थीं।

कोल्ड्रिफ सिरप पीने से मध्य प्रदेश में अब तक 25 बच्चों की मौत हो चुकी है। चेन्नई में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को श्रीसन फार्मा से जुड़े सात ठिकानों पर छापेमारी भी की है। श्रीसन फार्मा के प्रमुख कर्मचारियों और तमिलनाडु फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन के गिरफ्तार डायरेक्टर इन-चार्ज पी यू कार्तिकेयन के ठिकानों पर भी रेड की गई।

छोटी सी फैक्ट्री में कोल्ड्रिफ बनाई जा रही थी– सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक, श्रीसन फार्मा को तमिलनाडु फूड एंड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन से 2011 में लाइसेंस मिला था। यह कंपनी कांचीपुरम में महज 2000 वर्ग फीट के क्षेत्र में एक लोहे के शेड वाली छोटी सी फैक्ट्री में कोल्ड्रिफ सिरप बना रही थी।

यह कंपनी नेशनल ड्रग सेफ्टी के कई नियमों के उल्लंघनों के बावजूद एक दशक से भी अधिक समय तक, बिना किसी रोक-टोक के अपना कारोबार करती रही। स्टेट ड्रग कंट्रोल डिपार्टमेंट ने जांच के दौरान श्रीसन की मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में दवा बनाने के लिए जरूरी गुणवत्ता मानकों में कई कमियां मिलीं।

सिरप में बड़े पैमाने पर डाईएथिलीन ग्लाइकॉल की मिलावट पाई गई। तमिलनाडु के ड्रग्स कंट्रोल डिपार्टमेंट ने 7 अक्टूबर को सिरप बनाने वाली श्रीसन फार्मा कंपनी को कारण बताओ नोटिस जारी किया था।

एक नवम्बर को राज्य उत्सव के रूप में मनेगा स्थापना दिवस

उद्योग और रोजगार वर्ष की थीम पर मनाया जाए प्रदेश का स्थापना दिवस : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि 1 नवंबर मध्यप्रदेश स्थापना दिवस उद्योग एवं रोजगार वर्ष की थीम पर मनाया जाए। आत्मनिर्भर भारत और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश को लेकर हुए नवाचारों और विशेष गतिविधियों का प्रभावी रूप से प्रस्तुतीकरण किया जाए। 'रोजगार के मंदिर हैं उद्योग' की थीम के साथ कौशल उन्नयन, तकनीकी शिक्षा, उद्यमशीलता के विकास सहित युवाओं को रोजगार और आत्मनिर्भरता से जोड़ने वाली सभी गतिविधियों का स्थापना दिवस संबंधी कार्यक्रमों में प्रभावी और आकर्षक प्रस्तुतीकरण किया जाए। साथ ही प्रदेश में धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटन गतिविधियों से अर्थव्यवस्था में आई गतिशीलता पर भी प्रस्तुतिकरण हों। स्थापना दिवस पर बीते दो वर्षों में हुए नवाचारों को भी प्रदर्शित किया जाए। स्थापना दिवस को राज्य उत्सव के रूप में मनाया जाए। भोपाल में होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम के साथ सभी जिला और संभागीय मुख्यालयों पर भी भव्य कार्यक्रम आयोजित हों। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 1 नवंबर मध्यप्रदेश स्थापना दिवस समारोह के संबंध में मंत्रालय में सोमवार को हुई बैठक में यह निर्देश दिए।

प्रसिद्ध पार्श्व गायक जुबिन नौटियाल एक नवम्बर को देंगे प्रस्तुति– बैठक में बताया गया कि मध्यप्रदेश स्थापना दिवस 1 नवंबर को भोपाल में होने वाले राज्य स्तरीय कार्यक्रम में प्रसिद्ध पार्श्व गायक श्री जुबिन नौटियाल प्रस्तुति देंगे। लाल परेड ग्राउंड में होने वाले इस कार्यक्रम में श्रीकृष्ण के भक्ति पदों की प्रस्तुति के साथ ही विरासत से विकास की थीम पर ड्रोन-शो होगा। साथ ही आतिशबाजी भी होगी। मध्यप्रदेश स्थापना दिवस पर दो और तीन नवंबर को राज्य स्तरीय कार्यक्रम में लाल परेड ग्राउंड पर महानाट्य -सम्राट विक्रमादित्य की प्रस्तुति होगी।

विभिन्न विषयों पर प्रदर्शनियों के साथ लगेगा देशज व्यंजनों का मेला

बैठक में बताया गया कि स्थापना दिवस पर जननायकों के जीवन और अवदान पर भोपाल और जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शनी आयोजित की जाएगी। इसके साथ 'एक जिला-एक उत्पाद', सम्राट विक्रमादित्य और अयोध्या, सम्राट विक्रमादित्य के सील और सिक्के, मंदिर स्थापत्य तथा भारतीय ऋषि परम्परा पर प्रदर्शनियों को आयोजन किया जाएगा। इसी क्रम में एक से 3 नवम्बर तक वन मेला, ड्रोन टैक वर्कशॉप और एक्सपो, मध्यप्रदेश की पारंपरिक कला प्रदर्शनी, प्रदेश में विरासत से विकास, प्रदेश की बावड़ियों, भोज और भोपाल आदि विषय पर प्रदर्शनी और देशज व्यंजनों का मेला भी आयोजित किया जाएगा।

बैठक में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव श्री संजय दुबे, श्री नीरज मंडलोई, श्री संजय शुक्ला, श्री शिवशेखर शुक्ला, प्रमुख सचिव श्री राघवेंद्र सिंह और मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार श्री श्रीराम तिवारी उपस्थित थे।

बेटा एनकाउंटर में ढेर, पिता बोले- मैं बहुत खुश हूं

लावारिस में दफना दो, मेरठ में शहजाद ने 7 साल की बच्ची से गैंगरेप किया था

मेरठ (एजेंसी)। मेरठ पुलिस ने सोमवार सुबह मुठभेड़ में गैंगरेप के आरोपी को मार गिराया। मुठभेड़ सरुरपुर थाना क्षेत्र के जंगलों के पास हुई। पुलिस से घिरता देख बदमाश ने फायरिंग कर दी। पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग की। गोली लगने से 25 हजार का इनामी शहजाद उर्फ निक्की (34) ढेर हो गया। उसके सीने में गोली लगी। शहजाद के पिता रहीसुद्दीन और मां नसीमा ने बेटे की डेडबॉडी लेने से इनकार कर दिया है। दोनों ने कहा– हमें ऐसे दरिंदे बेटे से कोई मतलब नहीं है। उससे हमने 15 साल पहले ही रिश्ते खत्म कर दिए थे, मेरे लिए वो 15 साल पहले ही मर चुका था। उसे पुलिस ने सही सजा दी है। पुलिस ही लावारिस में उसे दफना दे।

बांदा में ट्रैक्टर-बाइक की टक्कर, तीन की मौत

बांदा (एजेंसी)। बांदा में तेज रफ्तार ट्रैक्टर–ट्राली से बाइक की टक्कर हो गई। रविवार रात हुए इस हादसे में एक ही बाइक पर सवार चाचा–भतीजे समेत 3 लोगों की मौत हो गई।

जोएल मोकिर, फिलिप अघियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

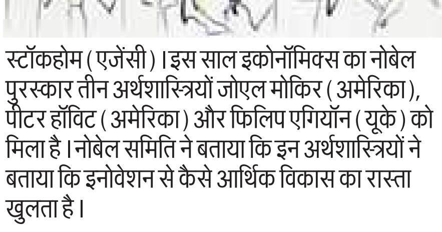

स्टॉकहोम (एजेंसी)। इस साल इकोनॉमिक्स का नोबेल पुरस्कार तीन अर्थशास्त्रियों जोएल मोकिर (अमेरिका), पीटर हॉविट (अमेरिका) और फिलिप एगियॉन (यूके) को मिला है। नोबेल समिति ने बताया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रास्ता खुलता है।

जयपुर में बोले अमित शाह: हम जो कहते हैं, वो करते हैं

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर एग्जिबिशन एंड कंवेंशन सेंटर (जेईसीसी) में तीन नए आपराधिक कानूनों पर लगी राज्य स्तरीय प्रदर्शनी का केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उद्घाटन किया।

जयपुर में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा- आज चार लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव की ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी हुई है। जब यहां पर राइजिंग राजस्थान समिट चल रहा था, मैं भी आया था।

मैंने अशोक गहलोत का कमेंट पढ़ा था कि 35 लाख करोड़ के एमओयू तो किए, जमीन पर कितने उतरेंगे? उस वक्त तो हमने किसी को जवाब नहीं दिया था। मैं आज गहलोत को कहना चाहता हूं कि ये भाजपा की सरकार है। कांग्रेस की सरकार नहीं है। हम जो कहते हैं, वो करते हैं।

मुझे खुशी है कि इतने कम समय में भजनलाल सरकार ने 35 लाख करोड़ में से 7 लाख करोड़ के एमओयू को जमीन पर उतारने का काम किया है। ये बहुत बड़ी उपलब्धि है। देशभर में जो इन्वेस्टमेंट समिट होती है, उसमें एमओयू को जमीन पर उतारने की जो एवरेज दर है, उससे भजनलाल सरकार कई गुना आगे आएगी, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

ट्रक से टकराई कार, जिंदा जला ड्राइवर

बीकानेर (एजेंसी)। बीकानेर के निकल रहे भारतमाला एक्सप्रेस-वे पर कार और ट्रक की टक्कर के बाद आग लग गई। हादसे में ट्रक ड्राइवर जिंदा चल गया। वहीं कार में सवार सरकारी टीचर की मौत हो गई। हादसा सोमवार सुबह करीब 6:30 बजे नापासर थाना क्षेत्र के रायसर गांव के पास हुआ। बताया जा रहा है कि सरकारी टीचर का परिवार कार में सवार था। इस हादसे में चार लोग घायल हो गए।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 30 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 14 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

आईआरसीटीसी घोटाले में लालू-राबड़ी और तेजस्वी के खिलाफ आरोप तय

तेजस्वी बोले- शाह ने एक महीने पहले धमकी दी थी चुनाव लड़ने लायक नहीं छोड़ेंगे

पटना (एजेंसी)। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने सोमवार को लालू यादव, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव को आईआरसीटीसी घोटाले में आरोपी माना। अब तीनों के खिलाफ केस चलेगा। कोर्ट ने कहा, लालू की जानकारी में टेंडर घोटाले की पूरी

साजिश रची गई। टेंडर में उनका हस्तक्षेप था। इससे लालू परिवार को फायदा हुआ। उधर लालू ने इन आरोपों को निराधार बताया। यह मामला रांची और पुरी स्थित आईआरसीटीसी की 2 होटलों के टेंडर में भ्रष्टाचार से जुड़ा है। बिहार चुनाव के बीच यह फैसला लालू और आरजेडी के लिए परेशानी खड़ी कर सकता है।

जनशक्ति जनता दल ने 21 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की

लालू प्रसाद के बड़े बेटे तेज प्रताप महुआ से लड़ेंगे चुनाव

पटना (एजेंसी)। जनशक्ति जनता दल के प्रमुख तेज प्रताप यादव ने अपनी पार्टी के 21 उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी है। तेज प्रताप यादव ने खुद महुआ विधानसभा सीट से चुनाव लड़ने का ऐलान किया है। तेज प्रताप यादव ने राष्ट्रीय जनता दल से अलग होकर अपने दम पर चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है।

दीपोत्सव पर दिखेगा विकास और संस्कृति का अनूठा संगम

दिखेगी योगी सरकार के विकास की झांकियां

लखनऊ/अयोध्या (एजेंसी)। भगवान राम की नगरी अयोध्या में इस बार नौवां दीपोत्सव न केवल दीपों की जगमगाहट से, बल्कि प्रदेश के विकास और भारतीय संस्कृति की जीवंत झांकियों से भी सजेगा। योगी सरकार की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए सूचना विभाग द्वारा 15 आकर्षक झांकियां निकाली जाएंगी, जबकि पर्यटन संस्कृति

विभाग रामायण के सातों कांडों पर आधारित थीम पर झांकियां प्रस्तुत करेगा। जिसमें 22 झांकियां साकेत महाविद्यालय में तैयार हो रही हैं। इसके साथ ही देश के विभिन्न राज्यों की लोक कलाएं और नृत्य दीपोत्सव की शोभा बढ़ाएंगे।
जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार द्विवेदी ने बताया कि सूचना विभाग की झांकियां योगी सरकार के विकास कार्यों को दर्शाएंगी। इनमें उत्तर प्रदेश में हुए बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और सांस्कृतिक विकास जैसे क्षेत्रों में सरकार की उपलब्धियों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाएगा। ये झांकियां प्रदेश की प्रगति और समृद्धि का प्रतीक होंगी। दूसरी ओर, संस्कृति विभाग द्वारा रामायण के सात कांडों बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किन्धाकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड और उत्तरकांड पर आधारित झांकियां तैयार की जा रही हैं।

मिडिल ईस्ट के लिए ये नया सवेरा, हमास ने सभी बंधकों को किया रिहा

युद्ध के साथ आतंक का भी अंत : ट्रम्प

● नेतन्याहू ने ट्रम्प के लिए नोबेल मांगा

तेल अवीव (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को इजराइली संसद (नेसेट) को संबोधित किया। उन्होंने इस बात को दोहराया कि उन्होंने आठ महीने में आठ संघर्षों को खत्म करवाया। ट्रंप ने यह भी कहा कि गाजा शांति समझौता पश्चिम एशिया के लिए एक नई सुबह है। इस्राइल और गाजा के बीच शांति समझौता करने के लिए इजराइल ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को इजराइली सर्वोच्च नागरिक सम्मान देने का ऐलान किया है।

ट्रंप यह सम्मान पाने वाले पहले गैर इजराइली नागरिक हैं। इसके साथ ही पीएम नेतन्याहू ने डोनाल्ड ट्रंप के शांति प्रयासों की सरहाना की है। इसके बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इजराइली नेसेट को संबोधित किया। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि अंधेरे और कैद में खौफनाक दो साल बिताने के बाद 20 बहादुर बंधक अब अपने परिवारों के पास वापस लौट रहे हैं। ट्रंप ने दोहराया, हमने आठ महीनों में आठ युद्ध निपटाए हैं, जिनमें यह भी शामिल है। ट्रंप ने कहा, अगर हम जंग में उतरते हैं, तो हम इसे ऐसे जीतते हैं, जैसा पहले कभी किसी ने नहीं जीता।

ट्रंप ने कहा, गाजा शांति समझौता मध्य पूर्व (पश्चिम एशिया) के लिए एक ऐतिहासिक सुबह है। उन्होंने कहा, नेतन्याहू से निपटना आसान नहीं है।

● अमेरिकी राष्ट्रपति ने अरब और इस्लामी देशों की तारीफ की- अमेरिकी राष्ट्रपति ने गाजा में शांति योजना के लिए अरब और इस्लामी देशों की तारीफ की और कहा कि उन्होंने एकजुट होकर हमास पर दबाव डाला और बंधकों को रिहा करने में मदद की। उन्होंने कहा, हमें बहुत मदद मिली। ऐसे कई लोग हैं, जिनके बारे में आपने सोचा भी नहीं होगा और मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। उन्होंने कहा, यह इजराइल और पूरी दुनिया के लिए एक अद्भुत कामयाबी है कि इन देशों ने शांति के साझेदार के रूप में मिलकर काम किया। उन्होंने आगे कहा, अब आने वाली पीढ़ियां इस क्षण को ऐसे याद रखेंगी, जब सब कुछ बदलना शुरू हो गया और बहुत ज्यादा बदलाव बेहतरी के लिए हुआ। यह केवल एक जंग का अंत नहीं है।

महागठबंधन में खत्म हुआ सीट बंटवारे का सस्पेंस!

● आरजेडी-कांग्रेस की इस फॉर्मूले पर बनी बात, जल्द हो सकती घोषणा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर एनडीए ने सीट बंटवारा कर लिया है। इस बीच महागठबंधन (इंडिया गठबंधन) की सीट शेयरिंग को भी लेकर सस्पेंस खत्म हो गया है। सूत्रों का कहना है कि, राजधानी दिल्ली में दो दिन चली बैठकों के दौर के बाद सीटों का बंटवारा फाइनल हो गया है। दिल्ली में कांग्रेस नेता राहुल गांधी और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव की बैठक हुई। इसके बाद दूसरे दौर की बैठक सोमवार को छत्तीसगढ़ की राज्यसभा सांसद फूलोदेवी नेताम के घर हुई। इस बैठक में राजद की तरफ से तेजस्वी यादव, सांसद संजय यादव और मनोज झा शामिल हुए। जबकि कांग्रेस की तरफ से संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, बिहार कांग्रेस प्रभारी कृष्णा अल्लावरु, बिहार कांग्रेस के अध्यक्ष राजेश राम, सीएलपी शकील अहमद मौजूद थे।

एनडीए ने सीट शेयरिंग का पहले ही ऐलान कर दिया था

भाजपा-101, जदयू- 101 सीटों पर चुनाव में

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर एनडीए ने पहले ही सीट शेयरिंग की घोषणा कर दी थी। बीजेपी 101 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। वहीं जदयू 101 सीटों पर लड़ने जा रही है। जबकि चिराग पासवान की पार्टी एलजेपी (आर) 29 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारेगी। जीतन राम मांझी की हिंदुस्तान अवाम मोर्चा (हम) को 6 और उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी आरएलएम को 6 सीटें दी गई हैं। अब बिहार एनडीए में जेडीयू बड़े भाई की भूमिका में नहीं रहेगी। जेडीयू और भाजपा दोनों बराबर खड़ी हो गई है। सीट शेयरिंग में चिराग की जिद मान ली गई। जबकि 40 सीटों की डिमांड करने वाले जीतन राम मांझी को 6 सीटें मिली हैं।

जनसुराज की दूसरी लिस्ट में 65 कैंडिडेट्स

पटना (एजेंसी)। बिहार चुनाव के लिए प्रशांत किशोर की पार्टी जनसुराज ने सोमवार को अपनी दूसरी लिस्ट जारी कर दी है। पार्टी की दूसरी लिस्ट में 65 कैंडिडेट्स के नाम हैं। जारी सूची में 20 रिजर्व सीट है, जबकि 46 जनरल हैं। लिस्ट में एससी – 19, एसटी – 1 और 14 मुस्लिम कैंडिडेट्स को उतारा गया है। 45 सामान्य सीटों में 34 मुस्लिम, ईबीसी और ओबीसी को उतारा गया है। इनमें सवर्णों को 11 सीटें दी गई हैं।

धरती पर तपस्वी का चमत्कार

सिर नीचे और पैर ऊपर कर 3500 किलोमीटर चल रहे हैं धर्मपुरी महाराज, वीडियो देख हर कोई दंग है

शहडोल (नप्र)। धर्मपुरी महाराज ने अमरकंटक से मां नर्मदा की 3500 किलोमीटर लंबी असाधारण परिक्रमा हाथों के बल चलकर शुरू की है, जो लगभग चार साल में पूरी होने की उम्मीद है। यह परिक्रमा उनकी तपस्या और समर्पण का प्रतीक है और लोगों के लिए आस्था का एक अद्भुत उदाहरण बन गई है। धर्मपुरी महाराज ने दशहरा पर्व के दिन अमरकंटक से मां नर्मदा की यह असाधारण परिक्रमा शुरू की है। जहां सामान्यतः लोग पैर से चलकर मां नर्मदा की परिक्रमा करते हैं, वहीं धर्मपुरी महाराज ने हाथों के बल चलकर 3500 किलोमीटर की परिक्रमा करने का संकल्प लिया है।

चार साल में पूरी होगी परिक्रमा- यह कठिन परिक्रमा लगभग चार वर्ष में पूरी होगी। महाराज जी अब तक लगभग 30 किलोमीटर से अधिक की यात्रा पूरी कर चुके हैं। वे प्रतिदिन लगभग तीन किलोमीटर की परिक्रमा कर रहे हैं। उनके शिष्य भी इस परिक्रमा में उनके साथ चल रहे हैं। डिंडौरी जिले के करंजिया विकासखंड निवासी धर्मपुरी महाराज ने हाथ के सहारे यह परिक्रमा शुरू की है। यह परिक्रमा उनकी तपस्या और समर्पण का प्रतीक है। मां नर्मदा के भक्त विभिन्न तरीकों से कठिन साधना करते रहे हैं। पहले भी ऐसे मामले सामने आए हैं, लेकिन ऊबड़-खाबड़ मार्ग में इस तरह की साधना चर्चा का विषय बनी हुई है।

देखकर सन्न रह जाते हैं लोग- मां नर्मदा की परिक्रमा हजारों लोग पैदल करते हैं, तो कुछ दंडवत होकर भी इस कठिन यात्रा को पूरा करते हैं। कुछ लोग वाहनों से भी परिक्रमा करते हैं। धर्मपुरी महाराज हाथों के बल चलकर मां नर्मदा की परिक्रमा करने के बड़े संकल्प में जुटे हुए हैं। आस्था का ऐसा अद्भुत और दुर्लभ नजारा शायद ही लोगों ने कभी देखा होगा। धर्मपुरी महाराज ने अपना यह संकल्प अमरकंटक से शुरू किया है। उन्होंने बताया कि यह सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि तपस्या के साथ समर्पण भी है। उन्होंने बताया कि वे अपने शरीर की सीमाओं को पार कर अध्यात्म के शिखर पर पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं। उनकी अद्भुत परिक्रमा देखकर लोग भी हैरत में हैं।

पहली बार देखा ऐसा संत- स्थानीय लोगों ने बताया कि अपने जीवनकाल में उन्होंने कई संत देखे हैं, लेकिन इस तरह की परिक्रमा का संकल्प करके परिक्रमा पथ पर हाथों के बल चलते पहली बार किसी संत को देखा है। गौरतलब है कि डिंडौरी से अमरकंटक मुख्य मार्ग में टू-लेन सड़क का कार्य चल रहा है। ऐसे में ऊबड़-खाबड़ मार्ग से गुजरना सभी के लिए चुनौती बनी हुई है। इस पर भी वे प्रतिदिन लगभग तीन किलोमीटर की यात्रा हाथों के बल चलकर पूरी कर रहे हैं।

बंगाल मेडिकल स्टूडेंट गैंगरेप केस- सभी 5 आरोपी गिरफ्तार

ममता के बयान पर पीड़ित के पिता बोले- मेरी बेटी आधी रात बाहर नहीं गई थी

कोलकाता/दुर्गापुर (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के पश्चिम बर्धमान जिले के दुर्गापुर में एमबीबीएस स्टूडेंट से गैंगरेप केस में पुलिस ने सोमवार को दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया। अब तक कुल पांच लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस ने रविवार को 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया था। 2 आरोपी फरार थे। वहीं, पीड़ित के पिता ने घटना पर सीएम ममता के बयान को असंवेदनशील बताते हुए दावा किया कि उनकी बेटी आधी रात को बाहर नहीं गई थी। पीड़ित के पिता ने कहा- मेरी बेटी का शुक्रवार (10 अक्टूबर) रात 8 बजे से 9 बजे के बीच रेप हुआ था। उन्होंने कहा- मुख्यमंत्री ममता ने झूठा दावा किया कि घटना आधी रात के बाद हुई। ममता खुद एक महिला हैं। उसके बावजूद उन्होंने असंवेदनशील टिप्पणी की और कहा कि महिलाओं को रात में बाहर नहीं निकलने देना चाहिए।

सोनिया गांधी ने वीरभद्र की प्रतिमा का अनावरण किया

● प्रियंका बोली- पीआर-इवेंटबाजी से दूर रहने वाले नेताओं की जरूरत

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल के छह बार के सीएम रहे स्व. वीरभद्र सिंह की रिज पर लगी प्रतिमा का कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी ने अनावरण किया। सोनिया ने रिमोट का बटन दबाकर प्रतिमा के सामने लगा पर्दा हटाया। पूरा शिमला वीरभद्र सिंह अमर रहे के नारों से गूंज उठा। इस दौरान, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने जो हिमाचल को जो रास्ता वीरभद्र सिंह और देश को महात्मा गांधी ने दिखाया, उस रास्ते पर चलने वाले बहुत कम नेता रह गए हैं। हमारे देश को आज सबसे ज्यादा जरूरत ऐसे नेताओं की है जो पीआर और इवेंट-बाजी से आगे बढ़कर इस देश के लिए काम करें।

मुस्लिम समुदाय के दो पक्ष आमने–सामने

नई कमेटी को चार्ज देने पर भड़के, जमकर हुई नारेबाजी ; भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के मोमिन ईदगाह में सोमवार शाम को चार्ज देने को लेकर मुस्लिम समुदाय के दो पक्ष आमने-सामने आ गए। करीब आधे घंटे तक दोनों तरफ से जमकर नारेबाजी हुई। इस दौरान पांच स्थानों की पुलिस एसडीएम के साथ मौके पर पहुंची और नई कमेटी को ताला तोड़कर चार्ज सौंपा। पुरानी कमेटी के सदस्यों ने इस बीच हंगामा किया। जिसे लेकर तकरीबन 7 से 10 लोगों की पुलिस ने गिरफ्तारी भी की। दरअसल वक्फ बोर्ड के आदेश पर पुरानी कमेटी का कार्यकाल खत्म होने के बाद नई कार्यकाल कमेटी को जनवरी में प्रभार सौंप दिया गया था, लेकिन पुरानी कमेटी ने चार्ज देने से मना कर दिया। जिसके बाद नई कमेटी के लोग के बोर्ड पहुंचे। यहां से आदेश दिया गया कि नई कमेटी ही अब ईदगाह का कार्यभार संभालेगी।

रशीद इंदौरी समारोह: परिचर्चा, तरही मुशायरा व शामे-ग़ज़ल से सजा यादगार कार्यक्रम

शेरो–अदब की चलती–फिरती अंजुमन, जीती–जागती यूनिवर्सिटी व इंदौर के साहित्यिक इतिहास का इंसाइक्लोपीडिया

(जावेद आलम)

इंदौर। मालवा की माटी के सपूत, उर्दू अदब के प्रतिष्ठित हस्ताक्षर रशीद शादानी इंदौरी के साहित्यिक व सांस्कृतिक अवदान का ऐतराफ़ समारोहपूर्वक किया गया। मध्यप्रदेश उर्दू अकादमी ने इसके लिए परिचर्चा, तरही मुशायरा व शामे-ग़ज़ल से सजे एक यादगार कार्यक्रम का आयोजन किया। शहर के अदब नवाज़ तबक़े ने इस भावभीने कार्यक्रम में शामिल हो कर अपने बुज़ुर्ग फ़नकार के तईं मान-सम्मान व प्रेम प्रदर्शित किया तथा उनके जल्द सेहतयाब होने की कामना की।

अपनी सुंदर शायरी की बदौलत साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बना लेने वाले शायर शादां इंदौरी के लायक़ शागिर्द रशीद शादानी इंदौरी की ख़िदमात का ऐतराफ़ करना तो था अहिल्या नगरी इंदौर के बाशिंदों को, मगर यह महती ज़िम्मेदारी उर्दू अकादमी निभा गई। अकादमी की सचिव व प्रसिद्ध शायरा डॉ. नुसरत मेहदी ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए नई नस्ल को साहित्यिक व सांस्कृतिक रूप से सजाने-संवारने के तईं रशीद इंदौरी की चिंता व उनके अतुलनीय योगदान का उल्लेख किया। उनके मुताबिक़ इसी के मद्देनज़र कार्यक्रम में युवा शायरों को रशीद इंदौरी के मिस्रों (पंक्तियों) पर कलाम कहने की दावत दी गई है। साथ ही उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से किसी रचनाकार को इमदाद देने की अपील, एक ग़लत तरीक़ा बताते हुए समझाइश दी कि सरकारी कामकाज का तरीक़ा होता है। इस प्रकार सार्वजनिक रूप से अपील का सरकारी व्यवस्था पर कोई असर नहीं पड़ता। यह ग़लत परंपरा है। युवा इससे भ्रमित हो सकते हैं। बता दें कि वरिष्ठ शायर व लेखक मसऊद बैग तिश्ना द्वारा सोशल मीडिया पर रशीद इंदौरी को लेकर डाली गई एक पोस्ट ने हलचल मचा दी थी। इस मौक़े पर उर्दू अकादमी द्वारा रशीद इंदौरी के लिए 25 हज़ार रुपए का चैक उनके सुपुत्र रफ़ीक़ ख़ान को सौंपा गया।

परिचर्चा के अंतर्गत डॉ. अज़ीज़ इरफ़ान अपने अग्रज रशीद इंदौरी पर लिखा ख़ाका (शब्द चित्र) पढ़ते हुए भावुक होते रहे, श्रोताओं की पलकें भीगती रहीं। उन्होंने रशीद इंदौरी के अध्ययन, अध्यापन व साहित्य के प्रति दीवनगी का उल्लेख करते हुए कहा कि सतत् मुतालिआ करने के बावजूद उनकी याददाश्त ऐसी है कि बरसों पहले पढ़े गए जुमले आज भी दोहरा देते हैं। यह भी कि परंपरा निर्वहन के प्रबल पक्षधर होने के बावजूद वे आधुनिक हैं और अपने दौर पर उनकी गहरी नज़र है। इसलिए वर्तमान के समस्त सरोकार उनकी रचनाओं में नज़र आते हैं।

प्रो. वसीम इफ़्तिख़ार अंसारी (बुरहानपुर), विमोचित पुस्तक रशीद इंदौरीः हयात, शख़्सियत और ख़िदमात के सह-संकलनकर्ता भी हैं। समय की कमी के दबाव में संक्षिप्त रूप से अपनी बात रखते हुए उन्होंने रशीद इंदौरी को शेरो-अदब की चलती-फिरती अंजुमन, शेरो-सुख़न की जीती-जागती यूनिवर्सिटी व इंदौर के साहित्यिक इतिहास का इंसाइक्लोपीडिया ठहराया। उनके मुताबिक़ हर इंसान को उसके मान से शिक्षित करने की लगन रशीद साहब में हिलौरें मारती है तथा उन्होंने इंदौर में गद्य सुनने की सुदृढ़ परंपरा शुरू की। इस सत्र का संचालन जावेद आलम ने किया।

स्थानीय समन्वयक व युवा शायर तजदीद साक़ी द्वारा आमंत्रित किए गए अपेक्षाकृत युवा रचनाकारों अशफ़ाक़ रशीद, परमीत सिंह मीत, मंज़ूर देपालपुरी, आदित्य ज़रखेज़, नौमान अली, निशिका नागर, जुनैद अहमद, प्रांजल यादव, नदीम ख़ान, विशाल शर्मा ने कई अच्छे अशआर सुनाए और ख़ूब दाद पाई।

मुक़ामी ग़ज़ल गायक गुरमीत सिंह डंग ने अपनी प्रभाव छोड़ने वाली आवाज़ में पहले रशीद इंदौरी की, बाद में मशहूर शायरों की ग़ज़लें सुना कर समां बांध दिया। हाफ़िज़ रफ़ीक़ मोहसिन ने रशीद इंदौरी का कलाम ख़ूबसूरती से पेश किया। श्रोताओं में मक़सूद निश्तरी, मसऊद बैग तिश्ना, गौहर देवासी, चुन्नीलाल वाधवानी, डॉ. रशीद, शकील अंसारी, दीपक असीम सहित कई अदब नवाज़ लोग मौजूद थे।

हालांकि अचानक बुख़ार का हमला हो जाने के कारण वयोवृद्ध व कमज़ोर हो चुके रशीद शादानी इंदौरी इस कार्यक्रम में शामिल न हो सके मगर उनके नाम पर जमा हुए परस्तार, प्रशंसक कार्यक्रम के आखिर तक जमे रहे।

दीपावली के पहले मोहन सरकार दे सकती है डीए-डीआर

केंद्र के कर्मचारियों को मिल रहा 58 प्रतिशत डीए-डीआर, मप्र में 55 प्रतिशत, कर्मचारियों ने फेस्टिवल एडवांस भी मांगा

भोपाल (नप्र)। केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों को 3 प्रतिशत महंगाई भत्ता (डीए) और महंगाई राहत (डीआर) दे दी है। इसे लेकर मध्यप्रदेश के कर्मचारी भी सक्रिय हो गए हैं। कर्मचारियों ने दीपावली से पहले 3 प्रतिशत डीए एवं डीआर और बोनस देने की मांग मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से की है।

कर्मचारी संगठनों का कहना है कि दीपावली से पहले ये लाभ दे दिया जाए, ताकि कर्मचारियों के परिवार त्योहार खुशियों के साथ मना सकें। प्रदेश के कर्मचारियों ने फेस्टिवल एडवांस की राशि बढ़ाने की भी मांग की है। उधर, माना जा रहा है कि राज्य सरकार जल्द ही कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का ऐलान कर सकती है।

10 लाख कर्मचारी-पेंशनर्स होंगे प्रभावित- तृतीय वर्ग कर्मचारी संघ के महामंत्री उमाशंकर तिवारी ने कहा कि दीपावली के अवसर पर हर घर में खर्च बढ़ जाता है। ऐसे में सरकार को कर्मचारियों को आर्थिक राहत देने के लिए बोनस के साथ 3 प्रतिशत महंगाई भत्ता और महंगाई राहत देना चाहिए। इससे प्रदेश के 10 लाख से अधिक कर्मचारियों और पेंशनर्स को लाभ मिलेगा। राज्य कर्मचारी संघ के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह ने भी सरकार से दीपावली से पहले महंगाई भत्ते की किस्त जारी करने की मांग की है।

प्रदेश के कर्मचारियों को मिल रहा 55 प्रतिशत डीए

वर्तमान में मध्य प्रदेश के कर्मचारियों को 55 प्रतिशत की दर से महंगाई भत्ता मिल रहा है। वहीं, केंद्र सरकार के कर्मचारी अब 3 प्रतिशत की बढ़ोतरी के बाद 58 प्रतिशत डीए प्राप्त कर रहे हैं। प्रदेश के कर्मचारियों का जुलाई 2025 से डीए ड्यू है।

29 साल से बंद बोनस देने की मांग

कर्मचारी संगठनों का कहना है कि वर्ष 1996 से प्रदेश में बोनस बंद है, जबकि उस समय कर्मचारियों को 1079 रुपए तक बोनस के रूप में मिलता था। केंद्र और रेलवे आज भी अपने कर्मचारियों को दीपावली बोनस दे रहे हैं, लेकिन मध्य प्रदेश में कर्मचारियों को इससे वंचित रखा गया है। यह फिर से शुरू किया जाना चाहिए। संगठनों ने कहा कि सरकार एक ओर दावा करती है कि कर्मचारियों को केंद्र के समान सुविधाएं दी जा रही हैं, लेकिन बोनस न देना कथनी और करनी में अंतर दर्शाता है। कर्मचारी संगठनों ने उम्मीद जताई है कि मुख्यमंत्री मोहन यादव दीपावली से पहले कर्मचारियों को राहत देने का फैसला लेकर त्योहार की खुशियां दो गुनी करेंगे।

सरल, सहज और आत्मीय है, 'यादों का सिलसिला': डीजीपी मकवाना

भोपाल। गत दिवस, पुलिस ऑफ़िसर्स मेस में, पूर्व डीजीपी नरेंद्र कुमार (एन के) त्रिपाठी, की पुस्तक 'यादों का सिलसिला' का विमोचन करते हुए पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना ने कहा कि यादों का सिलसिला किताब सरल सहज और आत्मीय है। इसमें कई संस्मरण में संवेदनाएं भी समाहित हैं। न्याय और प्रक्रिया का द्वंद भी देखने को मिलता है। पुलिस अधिकारियों को इसे जरूर पढ़ना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता माखन लाल चतुर्वेदी विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की एवं विशिष्ट अतिथि मनोज श्रीवास्तव थे। कार्यक्रम में चीफ इलेक्शन कमिश्नर एवं वरिष्ठ चिंतक मनोज श्रीवास्तव ने पुस्तक पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यादों का सिलसिला पुस्तक यादों के प्रभाव को कम नहीं करती, इसमें जीवन भर की यादें ऑटो बायोग्राफी के रूप में हैं। इसमें प्रदेश का बदलता परिदृश्य भी समाहित किया गया। विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि यादों का सिलसिला पुस्तक बड़े रोचक विवरण से भरी हुई है। इतनी अच्छी प्रस्तुति करना हर किसी के बस की बात नहीं। त्रिपाठी जी की तरह सभी अधिकारियों को अपने अनुभव को पुस्तक के रूप में संग्रहित करना चाहिए जो आने वाले लोगों को नसीहत बने। मीडियावाला के प्रधान संपादक सुरेश तिवारी ने इस अवसर पर यादों का सिलसिला पुस्तक में समाहित साहित्य के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम संचालन रामजी श्रीवास्तव, आभार प्रदर्शन महेंद्र जोशी एवं स्वागत अजय श्रीवास्तव नीलू ने किया।

सिंहस्थ के कार्य समय-सीमा में पूर्ण करें एमपी ट्रांसको : तोमर

सिंहस्थ-2028 के कार्यों की समीक्षा की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने मुख्यालय जबलपुर में मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एम.पी. ट्रांसको) द्वारा सिंहस्थ-2028 के लिये किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की। समीक्षा में ऊर्जा मंत्री श्री तोमर को एम.पी. ट्रांसको के प्रबंध संचालक सुनील तिवारी ने वर्तमान कार्यों की

प्रगति से अवगत कराया। मंत्री श्री तोमर ने निर्देश दिये कि सिंहस्थ-2028 प्रदेश सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है, सिंहस्थ के कार्यों की नियमित निगरानी रखी जायें और तय समय सीमा व उच्च गुणवत्ता के साथ सभी कार्य पूरे किये जाये।

एम.पी. ट्रांसको उज्जैन में कर रही है यह कार्य

मंत्री श्री तोमर ने सिंहस्थ-2028 में उज्जैन में निर्बाध विद्युत आपूर्ति के लिये पहले चरण में निर्माणधीन 132 के.व्ही. सब स्टेशन चिंतामन एवं 132 के.व्ही. सब स्टेशन त्रिवेणी बिहार के निर्माण कार्यों की प्रगति जानी। इसके अलावा एम.पी. ट्रांसकों 220 के.व्ही. सब स्टेशन शंकरपुरा में वर्तमान 20 एम.व्ही.ए. क्षमता के अपग्रेड कर 50 एम.व्ही.ए. क्षमता का तथा अपने 400 के.व्ही. सब स्टेशन ताजपुर में 50 एम.व्ही.ए. क्षमता का नया ट्रांसफार्मर स्थापित कर रही है। जिनकी कार्य प्रगति के बारे मे भी ऊर्जा मंत्री ने जानकारी प्राप्त कर आवश्यक निर्देश दिये।

दिवाली पर्व को देखते हुए दूध, मावा-मिठाई की जांच करेंगे अफसर

फूड कंट्रोलर ने कलेक्टर को लिखा लेटर, कहा- हर रोज सैंपलिंग करवाएं

भोपाल (नप्र)। दिवाली पर दूध, मावा-मिठाई समेत खाद्य सामग्री की जांच के लिए टीमें मैदान में उतरेंगी। इसे लेकर फूड कंट्रोलर दिनेश श्रीवास्तव ने सभी कलेक्टरों को भी लेटर लिखा है। लेटर के बाद भोपाल में टीमें मैदान में उतर गई हैं। होटल, रेस्टोरेंट, डेयरी पर जांच के साथ ही ट्रेनों पर भी नजर रखी जाएगी। ग्वालियर-चंबल क्षेत्र से भोपाल में हर साल अमानक मावा पहुंचता है।

फूड कंट्रोलर श्रीवास्तव ने लिखा में कहा है कि खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 तथा नियम 2011 का कड़ाई से पालन कराया जाए। पत्र में लिखा- त्योहारी सीजन में मिलावट की रोकथाम के लिए खाद्य प्रतिष्ठानों का लगातार निरीक्षण हो। जिन प्रतिष्ठानों पर मिलावट या संदिग्ध सामग्री की आशंका हो, वहां से तत्काल नमूने लेकर नियम अनुसार कार्रवाई की जाए। इसके साथ ही अवैध रूप से खाद्य पदार्थ निर्माण करने वाले प्रतिष्ठानों पर भी अभियान चलाकर कार्रवाई की जाए।

इन पर विशेष नजर

दिवाली के दौरान जिन खाद्य पदार्थों का उपयोग अधिक होता है। जैसे- दूध, मावा, मिठाई, तेल, मसाले, गिफ्ट हैम्पर, ड्राईफ्रूट, चॉकलेट, बिस्किट, नमकीन, ब्रांडेड स्वीट्स आदि की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए। इसके लिए फूड सेफ्टी ऑन व्हील्स, मोबाइल फूड टेस्टिंग लैब्स और चलित खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाएं तैनात की जाए।

इसी प्रकार मैजिक बॉक्स, चेकिंग पॉइंट्स और विशेष टीमें निरीक्षण करें। किसी भी शिकायत या संदिग्ध स्थिति की सूचना पर तत्काल मौके पर जाकर प्रभावी कार्रवाई करें और रिपोर्ट मुख्यालय भोपाल को अनिवार्य रूप से भेजें।

लोग भी यह करें

त्योहार के अवसर पर मिठाई या खाद्य सामग्री खरीदते समय उसके निर्माण और समाप्ति तिथि, गुणवत्ता, ब्रांड और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें ताकि किसी प्रकार की मिलावट से बचा जा सके।

भोपाल में 100 मीटर सड़क धंसी

हादसे के बाद एक लेन का ट्रैफिक रोका गया, इंदौर से सागर को जोड़ती है ये रोड

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बिलखिरिया के पास एक सड़क का करीब 100 मीटर का हिस्सा धंस गया। इसके बाद एक तरफ का रास्ता बंद करा दिया गया है। यह सड़क एमपीआरडीसी की है, जो इंदौर, होशंगाबाद, जबलपुर, जयपुर, मंडला, सागर को जोड़ती है।

घटना सोमवार दोपहर 12 से 1 बजे के बीच की है। मंडीदीप से ईंटखेड़ी की ओर जाने वाला ब्रिज के पास का हिस्सा करीब 100 मीटर धंस गया है। गनीमत रही की इस दौरान वहां से कोई नहीं गुजर रहा था। रिटेनिंग वॉल गिरने का वीडियो भी सामने आया है।

सूचना मिलते ही मध्यप्रदेश सड़क विकास निगम के अधिकारी और स्थानीय प्रशासन के अधिकारी तत्काल मौके पर पहुंच गए। सुरक्षा की दृष्टि से पूरे क्षतिग्रस्त क्षेत्र को बैरिकेड कर दिया गया है ताकि किसी प्रकार की अप्रिय घटना न हो। फिलहाल, सड़क धंसने के कारणों की जांच के साथ ही मरम्मत शुरू कर दी गई है।

सूखी सेवनिया थाना प्रभारी रामबाबू चौधरी ने बताया कि ब्रिज धंसने के बाद ट्रैफिक को डायवर्ट किया है। मौके पर पुलिस बल की भी तैनाती की है।

समय पर मेंटेनेंस होता तो नहीं धंसती सड़क

जिस किसान आशीष यादव के खेत के किनारे ये सड़क धंसी है, उनका कहना है कि हर साल यहां मेंटेनेंस का काम चलता रहता है, लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया जाता। यदि समय रहते मेंटेनेंस किया जाता तो यह सड़क नहीं धंसती।

जांच के लिए बनाई टीम

घटना पर एमपीआरडीसी ने जांच दल गठित किया है, जिसमें मुख्य अभियंता बीएस मीणा, जीएम मनोज गुप्ता और जीएम आरएस चंदेल शामिल हैं। यह दल आर-ई वॉल के धंसने के कारणों की तकनीकी जांच कर जल्द ही अपनी रिपोर्ट शासन को देगा। इसके आधार पर जरूरी कार्रवाई की जाएगी।

मामले को गंभीरता से लेते हुए एमपीआरडीसी के प्रबंध संचालक भरत यादव ने स्पष्ट किया है कि यदि जांच रिपोर्ट में किसी प्रकार की लापरवाही या अनियमितता पाई जाती है, तो संबंधित जिम्मेदार के विरुद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

2013 में बनी थी ये सड़क

एमपीआरडीसी के अधिकारियों के अनुसार, यह सड़क साल 2013 में मेसर्स ट्रॉन्सट्राय प्रा.लि. ने बीओटी मॉडल के तहत बनाई गई थी। अनुबंध की शर्तों का पालन नहीं करने पर साल 2020 में कंपनी का अनुबंध निरस्त कर दिया गया था।

एलएचएआई ने कहा- सड़क हमारे अधिकार क्षेत्र की नहीं

पहले ब्रिज और सड़क एनएचएआई की होने की बात सामने आई थी। जिस पर एनएचएआई ने स्पष्टीकरण जारी किया है। एक अधिकारी ने कहा- सूखी सेवनिया के तहत बिलखिरिया की ओर से आने वाले ग्राम कल्याणपुर रेलवे ब्रिज से करीब 100 मीटर आगे पुल के धंसने की घटना हुई है। यह सड़क हमारे अधिकार क्षेत्र की नहीं है। यह मध्यप्रदेश रोड डेवलपमेंट कार्पोरेशन के अंतर्गत आती है।

पीडब्ल्यूडी मंत्री ने कहा था- सड़कें रहेंगी तब तक गड्ढे होते रहेंगे

मध्य प्रदेश में खराब सड़कों के निर्माण और सड़कों के गड्ढों को लेकर पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह ने तीन महीने पहले कहा था कि अभी ऐसी कोई तकनीक नहीं आई है, जिसके आधार पर कह सकें कि ऐसी सड़क बनाएंगे जिस पर कभी गड्ढा होगा ही नहीं। जब तक सड़कें रहेंगी तब तक गड्ढे होते रहेंगे। गलत तब है जब चार साल तक खराब न होने वाली सड़क में छह माह में ही गड्ढे हो जाएं। राकेश सिंह ने कहा कि जो कुछ हम कर रहे हैं, प्रयास वही हो सकते हैं। मुझे ध्यान में नहीं आता कि दुनिया में कोई ऐसी सड़क भी है, जिसमें गड्ढा होता ही नहीं। ऐसी कोई तकनीक अभी पीडब्ल्यूडी के ध्यान में नहीं आई है।

धंसी सड़क पर बैठकर कांग्रेस का प्रदर्शन

राजधानी में सड़क धंसने के मामले में राजनीति भी शुरू हो गई है। देर शाम कांग्रेस नेता धंसी सड़क पर पहुंचे और प्रदर्शन किया। कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला के नेतृत्व में कांग्रेसियों ने पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह का इस्तीफा मांगा। कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला ने कहा कि भाजपा सरकार कर्ज और करप्शन का प्रतीक बन चुकी है। चाहे 90 डिग्री ब्रिज की बात हो, चाहे यह धंसी सड़क की बात हो। एक तरफ तो पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान कहते हैं कि मप्र की सड़कें अमेरिका से भी अच्छी हैं। हम यहां से मिट्टी लेकर शिवराज जी के घर जाएंगे और पूछेंगे कि क्या यही मिट्टी से सड़कें बन रही हैं। उन्होंने कहा कि बुधवार को कांग्रेस अपने कार्यकर्ताओं के साथ इस सड़क का मृत्यु भोज आयोजित करेगी।

वीएचपी बोली- दिवाली पर हिंदू दुकानदारों से खरीदारी करें

भोपाल के चौराहों पर पोस्टर लगवाए, लिखा- खरीदारी उनसे करें, जो आपकी खरीदी से दीपावली मना सकें

भोपाल (नप्र)। दीपावली से पहले भोपाल के चौक-चौराहों पर विश्व हिंदू परिषद के होर्डिंग्स चर्चा में हैं। वीएचपी के होर्डिंग्स पर लिखा है- अपना त्योहार अपनों से व्यवहार। दीपावली की खरीदारी उनसे करें, जो आपकी खरीदी से दीपावली मना सकें।

वीएचपी के प्रचार प्रमुख जितेंद्र चौहान का कहना है कि विश्व हिंदू परिषद की ओर से लगवाए इन पोस्टर्स का एकमात्र उद्देश्य हिंदू का सपोर्ट करना है। हम इसके माध्यम से समाज का जागरण करना चाहते हैं।

कांग्रेस बोली- संस्कृति पर चोट ज्यादा दिन नहीं चलेगी- विश्व हिन्दू परिषद के पोस्टर्स को लेकर पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता पीसी शर्मा ने कहा- क्या ये लोग मोहन भागवत के खिलाफ हैं? भागवत जी कहते हैं सब अपने हैं। बाबा आदम के जमाने से सब अपने हैं। यह भारतीय संस्कृति है इस संस्कृति पर चोट करोगे तो ज्यादा दिन नहीं चलेगी। सांप्रदायिक सद्भाव के कई उदाहरण हैं।

भाजपा विधायक बोले- खरीदारी उसी से जिसका सामान स्वच्छ- हुजूर से भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा कि स्वदेशी अभियान चल ही रहा है। जिनमें स्वदेशी भाव है, जो भारत माता और हिंदुस्तान को अपनी मातृभूमि मानते हैं। जो इस देश के लिए जीते हैं और मरते हैं, उनसे पटाखे-फुलझड़ी, मिठाई, दीपक, सजाने के लिए झालर लो। उनसे व्यवहार करना ही चाहिए। जो हमारे देश के लिए रहेगा, हम उससे सामान खरीदेंगे।

व्यापारी को भी ग्राहक को देवता के रूप में स्वीकार करना चाहिए। ऐसे तो कोई भी एक्सेप्ट नहीं करेगा कि सब्जी पर भी थूंक दो, मिठाई पर भी थूंक दो। जब थूंकोगे तो लोग तुम पर भी थूंकेंगे, लोग तुम्हारी दुकान से सामान क्यों खरीदेंगे।

भावांतर योजना से किसानों को मिले अधिकतम लाभ

पंजीयन केंद्र बढ़ाएं, प्रचार तेज़ करें : मंत्री भूरिया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की प्राथमिकता वाली भावांतर भुगतान योजना की प्रगति की समीक्षा आज महिला एवं बाल विकास मंत्री और मंदसौर-नीमच जिले की प्रभारी मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से हुई। बैठक में मंदसौर और नीमच जिलों के जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

सुश्री भूरिया नेवीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में स्पष्ट निर्देश दिए कि किसानों को योजना का लाभ सुचारु रूप से और समय पर मिले, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि योजना का उद्देश्य किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त करना है और सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है कि कोई भी पात्र किसान इससे वंचित न रहे। उन्होंने मंडियों एवं उपमंडियों में हेल्प डेस्क स्थापित करने, पर्याप्त मात्रा में पंजीयन केंद्र संचालित करने और प्रचार-प्रसार के माध्यम से योजना की जानकारी गांव-गांव तक पहुंचाने के निर्देश दिए।

उल्लेखनीय है कि मंदसौर जिले में अब तक 16,385 किसानों का पंजीयन हो चुका है और 256 पंजीयन केंद्रों के माध्यम से यह प्रक्रिया लगातार जारी है। इनमें से 68 केंद्र सहकारी समितियों में संचालित हैं। जिला प्रशासन ने खरीदी प्रक्रिया के लिए मंडियों में पेयजल, छांव, तकनीकी सहायता, रियल टाइम स्टॉक मॉनिटरिंग और मॉडल रेट निगरानी की प्रभावी व्यवस्था की है। पंजीयन कार्य 3 से 17 अक्टूबर तक चलेगा, जबकि खरीदी प्रक्रिया 24 अक्टूबर से 15 जनवरी 2026 तक प्रस्तावित है। नीमच जिले में भी योजना के अंतर्गत पंजीयन कार्य तेज़ी से चल रहा है। अब तक 7,000 से अधिक किसानों का पंजीयन हो चुका है और जिले में 71 पंजीयन केंद्र कार्यरत हैं। इनमें से 68 सहकारी समितियों में एवं 3 मार्केटिंग सोसायटी में संचालित हैं। मंडियों में सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं और प्रचार के लिए पोस्टर, बैनर, पंपलेट के साथ कृषि गोष्ठियों का भी आयोजन किया जा रहा है। मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार किसानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान की जा रही है। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे प्रत्येक स्तर पर यह सुनिश्चित करें कि किसानों को कोई परेशानी न हो और योजना का लाभ उन्हें पारदर्शी एवं सरल प्रक्रिया के तहत प्राप्त हो।

पुराने भोपाल में चार पहिया और लोडिंग वाहन प्रतिबंधित

फेस्टिवल के चलते बदला ट्रैफिक प्लान, अस्थायी पार्किंग की भी हुई व्यवस्था

भोपाल (नप्र)। दीपावली पर्व के चलते भोपाल में अगले 8 दिनों तक यातायात पुलिस ने विशेष व्यवस्था लागू की है। पुराने शहर से लेकर न्यू मार्केट, 10 नंबर मार्केट, एमपी नगर और बैरागढ़ तक उन इलाकों में ट्रैफिक डायवर्जन और अस्थायी पार्किंग की व्यवस्था की गई है।

जहां दीपावली की खरीदारी के दौरान सबसे ज्यादा भीड़ रहने की संभावना है। नगरीय यातायात पुलिस भोपाल के अनुसार, 13 से 21 अक्टूबर तक भीड़भाड़ की स्थिति को देखते हुए कई बाजारों में चार पहिया और तीन पहिया वाहनों का प्रवेश सीमित रहेगा।

पुराना भोपाल क्षेत्र में नहीं जा सकेंगे चार पहिया और लोडिंग वाहन- जनकपुरी, जुमेराती, छोटे भैया चौराहा, घोड़ा नक्कास, हनुमानगंज और आजाद मार्केट जैसे इलाकों में लोडिंग वाहन, ऑटो और चारपहिया वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा।

करोंद, डीआईजी बंगला, सिंधी कॉलोनी और शाहजहांनाबाद से आने वाले वाहन भोपाल टॉकीज चौराहे से आगे नहीं जा सकेंगे, उन्हें बाल विहार ग्राउंड में पार्क करना होगा।

भारत टॉकीज से आने वाले दोपहिया वाहन अपने वाहन सेंट्रल लाइब्रेरी मैदान में पार्क करेंगे।

संगम टॉकीज और सब्जी मंडी क्षेत्र के लिए सब्जी मंडी परिसर में अस्थायी पार्किंग की व्यवस्था की गई है। लखेरापुरा, इतवारा, मारवाड़ी रोड और इब्राहिमपुरा से चारपहिया-तीनपहिया वाहन चौक बाजार की ओर नहीं जा सकेंगे। उन्हें सरस्वती स्कूल के पास मल्टीलेवल पार्किंग या सदर मंजिल पार्किंग का उपयोग करना होगा। भीड़ अधिक होने पर दोपहिया वाहन भी इन्हीं पार्किंग स्थलों पर भेजे जाएंगे।

10 नंबर मार्केट में वन-वे ट्रैफिक व्यवस्था- 13 से 21 अक्टूबर तक 10 नंबर मार्केट की ओर जाने वाले मार्ग को वन-वे बनाया गया है। वाहन वंदे मातरम चौराहे से प्रवेश कर 10 नंबर मार्केट तिराहा होते हुए नेशनल अस्पताल की ओर जा सकेंगे। वहीं, नेशनल अस्पताल से वंदे मातरम् चौराहे की दिशा में आवाजाही प्रतिबंधित रहेगा।

न्यू मार्केट और एमपी नगर के लिए मल्टीलेवल पार्किंग का उपयोग करें

न्यू मार्केट क्षेत्र में टीटी नगर थाना चौराहे के पास मल्टीलेवल पार्किंग उपलब्ध है। भीड़ बढ़ने पर रंगमहल चौराहे से थाना चौराहे की दिशा में आवागमन को परिवर्तित किया जा सकता है। एमपी नगर जोन-1 के व्यापारी और खरीदार स्थानीय मल्टीलेवल पार्किंग और निर्धारित स्थलों में ही वाहन पार्क करें।

बैरागढ़ में चंचल चौराहे के पास व्यवस्था

बैरागढ़ क्षेत्र में चंचल चौराहे के पास मल्टीलेवल पार्किंग तैयार है। इसके अलावा, नए ब्रिज निर्माण के दौरान पीडब्ल्यूडी द्वारा छोटे अस्थायी पार्किंग स्थल भी बनाए जा रहे हैं। जहां ग्राहक अल्प समय के लिए वाहन खड़े कर सकेंगे। इस दौरान पुलिस ने व्यापारियों से अनुरोध किया है कि सभी व्यापारी रात 12 बजे से सुबह 7 बजे के बीच ही सामान की लोडिंग-अनलोडिंग का कार्य करें, ताकि दिन में जाम की स्थिति न बने।

संपादकीय

शर्म अल शेख: मोदी का न जाना

मिस्र के शहर शर्म अल शेख में गाजा शांति सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का न जाना कूटनीतिक हल्कों में चर्चा का विषय है। क्योंकि मोदी उन नेताओं में से हैं, जिन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पहल पर हमास और इजराइल में शांति समझौते का उत्साह से स्वागत किया था। वैश्विक शांति की दृष्टि से यह सम्मेलन बड़ी घटना है और इसमें दुनिया के कई देशों के बड़े नेता शामिल हो रहे हैं। जबकि भारत की ओर से प्रधानमंत्री के दूत के रूप में विदेश राज्य मंत्री कीर्तिवर्धन सिंह को भेजा गया है। यह एक दिवसीय सम्मेलन गाजा पट्टी में युद्ध को समाप्त करने के लिए एक व्यापक समझौते को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। इसमें राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी शामिल हुए। इस बीच शांति समझौते की अहम कड़ी के रूप में हमास ने सोमवार को इजराइल के 20 बंधकों को छोड़कर सकारात्मक संदेश दिया है। लेकिन भारत के संदर्भ में यह सवाल पूछा जा रहा है कि इस महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं क्यों नहीं गए? गौरतलब है कि शर्म अल-शेख़ एक प्रसिद्ध रिसॉर्ट शहर है जिसे अंतरराष्ट्रीय बैठकों के लिए जाना जाता है। इसमें अरब लीग की बैठकें, 2022 का विश्व जलवायु सम्मेलन और अरब-इजराइल वार्ताओं के कई दौर शामिल हैं। यह शहर छुट्टियाँ मनाने के लिए यूरोपीय और मिस्री पर्यटकों में काफ़ी लोकप्रिय है। इसे पर्यटकों की सैरगाह भी कहा जाता है। शर्म अल-शेख़ सम्मेलन मिस्र और अमेरिका के संयुक्त निमंत्रण पर आयोजित किया जा रहा है। जानकारों का कहना है कि पीएम मोदी को इस सम्मेलन का निमंत्रण देर से मिला। वो पहले ही कई हम कार्यक्रमों में व्यस्त हैं। मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल फ़तह अल-सीसी और राष्ट्रपति ट्रंप ने सम्मेलन का साझा निमंत्रण सम्मेलन के सिर्फ दो दिन पहले यानी 11 अक्टूबर को दिया। आमतौर पर किसी राजनयिक मामले में अगर राष्ट्राध्यक्ष को बुलाया जाता है तो काफी पहले निमंत्रण दिया जाता है। इसके लिए 48 घंटे का समय काफ़ी कम है। दूसरा कारण इस सम्मेलन में समझौते के दो मुख्य पक्ष इजराइल और हमास दोनों ही शामिल नहीं हो रहे हैं। इजराइल ने सुरक्षा वजहों का हवाला दिया तो हमास ने इस समझौते की कुछ शर्तों के कारण इसका बायकॉट किया है। एक और संभावित कारण अमेरिका से भारत का टैरिफ विवाद भी हो सकता है। इसको लेकर दोनों देशों के बीच बातचीत जारी है। लेकिन इस कारण मोदी और ट्रंप के बीच रिश्ते पहले जैसे दोस्ताना नहीं रह गए हैं। शायद मोदी नहीं चाहते थे कि इस इस मुद्दे का समाधान होने से पहले वो ट्रंप से मिलें। कूटनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि कभी-कभी दो कदम पीछे खींचना भी देश के हित में होता है। लिहाजा भारत का यह काफ़ी चतुराई भरा कदम है। यानी वह सम्मेलन में हिस्सेदारी भी कर रहा है और मोदी ने इसमें शामिल न होकर दुनिया को एक संदेश भी दे दिया है। बहरहाल जहां तक गाजा शांति समझौते की सफलता और इसके भविष्य का प्रश्न है तो अभी भी कई किंतु परंतु हैं। क्योंकि हमास के मन में समझौते को लेकर अभी भी कुछ शंकाएं हैं। जबकि इजराइली सेना गाजा से भले पीछे हट रही हों, लेकिन उसका इरादा गाजा पर किसी न किसी रूप में नियंत्रण बनाए रखने का है। ऐसे में गाजा पर नियंत्रण किसका रहेगा, यह बड़ा सवाल है और बतौर शांति समझौता निगरानी एजेंसी अमेरिका की एंट्री भी कई सवाल खड़े करती है। और सबसे बड़ा प्रश्न तो पूरी तरह बर्बाद हो चकी गाजा पट्टी के पुनर्निमाण का है, जिनमें उत्तर मिलने अभी बाकी हैं।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति जी के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और अहिंसक सभ्यता के पैरोकार हैं।

डॉ. अम्बेडकर के धम्मचक्र प्रवर्तन की अंतर्यात्रा

नए धम्म का आविष्कार के बारे में बुद्ध एवं उनका धम्म में स्पष्ट विवरण मिलता है कि नया प्रकाश प्राप्त करने के लिए गौतम जब ध्यानस्थ हुए, तो उन दिनों सांख्य-दर्शन का अत्यधिक प्रभाव था। बुद्ध ने सोचा कि संसार में दु:ख और कष्ट के अस्तित्व में कोई विवाद नहीं है। फिर भी गौतम की रुचि यह पता लगाने में थी कि दु:ख से छुटकारा कैसे पाया जाए? सांख्य-दर्शन के पास इस समस्या का कोई उत्तर नहीं था। इसलिए दु:ख और कष्ट से कैसे छुटकारा पाया जाए, इसी समस्या पर उन्होंने सारा ध्यान लगाया। स्वभावत: पहला प्रश्न बुद्ध ने अपने आपसे किया कि किसी व्यक्ति के दु:ख और कष्ट के क्या कारण हैं? उसका दूसरा प्रश्न था कि कष्ट से छुटकारा कैसे पाया जाए? इन दोनों प्रश्नों का बुद्ध ने एक सही उत्तर पा लिया, जिसे सम्यक बोध, सम्यक ज्ञान कहा जाता है। इसी प्रकार उस पीपल के वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को गौतम बुद्ध होने का बोध हुआ यानि महाज्ञान की प्राप्ति हुई थी, उस को बोधि-वृक्ष के नाम से जाना जाता है।

14 अक्टूबर 1956 उस ऐतिहासिक घटना का स्मरण है। इसी दिन डॉ. बाबासाहेब भीमराव रामजी अम्बेडकर ने अपने लाखों अनुयायियों के साथ नागपुर की दीक्षाभूमि में हिंदू धर्म का त्याग कर बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था। उन्होंने यह दिन इसलिए चुना था क्योंकि सम्राट अशोक ने भी इसी दिन बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। वह तिथि थी विजयादशमी जिसे आज भारत के बुद्धिष्ट अशोक विजयादशमी के नाम से जानते हैं। यह दिन बुद्ध की शिक्षाओं के प्रसार और भारत में बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान का प्रतीक है। समानता के उद्घोष के इस अवसर पर डॉ. अम्बेडकर ने यह संदेश दिया कि सभी मनुष्य समान हैं और उनमें कोई भेद नहीं है। बंधुत्व के बारे में डॉ. अम्बेडकर ने कहा हमें एक-दूसरे के प्रति भाईचारे और प्रेम की भावना रखनी चाहिए। न्याय के विषय में अम्बेडकर का मत था कि हमें निष्पक्ष और न्यायपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। नैतिक आचरण के बारे में उनकी इच्छा थी कि हमें सही समझ, सही बोल, सही कर्म और सही प्रयास के अष्टांगिक मार्ग का पालन करना चाहिए।

नए धम्म का आविष्कार के बारे में बुद्ध एवं उनका धम्म में स्पष्ट विवरण मिलता है कि नया प्रकाश प्राप्त करने के लिए गौतम जब ध्यानस्थ हुए, तो उन दिनों सांख्य-दर्शन का अत्यधिक प्रभाव था। बुद्ध ने सोचा कि संसार में दुःख और कष्ट के अस्तित्व में कोई विवाद नहीं है। फिर भी गौतम की रुचि यह पता लगाने में थी कि दुःख से छुटकारा कैसे पाया जाए? सांख्य-दर्शन के पास इस समस्या का कोई उत्तर नहीं था। इसलिए दुःख और कष्ट से कैसे छुटकारा पाया जाए, इसी समस्या पर उन्होंने सारा ध्यान लगाया। स्वभावतः पहला प्रश्न बुद्ध ने अपने आपसे किया कि किसी व्यक्ति के दुःख और कष्ट के क्या कारण हैं? उसका दूसरा प्रश्न था कि कष्ट से छुटकारा कैसे पाया जाए? इन दोनों प्रश्नों का बुद्ध ने एक सही उत्तर पा लिया, जिसे सम्यक बोध, सम्यक ज्ञान कहा जाता है। इसी प्रकार उस पीपल के वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को गौतम बुद्ध होने का बोध हुआ यानि महाज्ञान की प्राप्ति हुई थी, उस को बोधि-वृक्ष के नाम से जाना जाता है। इस महान यात्रा से निकले धम्म से डॉ. अम्बेडकर को आत्मतोष था क्योंकि यह बुद्ध की पराकाष्ठा थी। बुद्ध ने समानता, न्याय, बंधुता और नैतिकता के बारे में तभी कुछ कहा जिसमें कोई भेद नहीं थे। उनके ज्ञान से ज्ञानोदय में सबके लिए समत्व था। डॉ. अम्बेडकर इसे पसंद करते थे।

डॉ. अम्बेडकर ने यह आग्रह किया कि धर्म विशुद्ध सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। बुद्ध कभी वर्णाश्रम धर्म में विश्वास नहीं रखते थे। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि हम सब एक से हैं। मनुष्य-मनुष्य के बीच किसी तरह का भेदभाव नहीं होना चाहिए। जन्म पर कोई श्रेष्ठ या निम्न नहीं हो सकता। श्रेष्ठता या नीचता केवल अपनी करनी के आधार से ही प्राप्त होती है। बुद्ध ने ये बातें बताई हैं। लोग अगर फिर बौद्ध धर्म का स्वीकार करेंगे तो यह देश एक बार फिर वैभव संपन्न बनेगा। किसी और तरह से जातिभेद खत्म होना संभव नहीं है। सचमुच अगर कोई जाति-धर्म खत्म करना चाहते हैं तो उनके लिए केवल यही एक उपाय हे कि वे बौद्ध धर्म को स्वीकार करें। बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर संपूर्ण वांगमय को पढ़ें दिल्ली शेड्यूल्ड कास्टस वेलफेयर एसोसिएशन की बैठक में डॉ. अम्बेडकर द्वारा दिए गए इस वक्तव्य को बार-बार पढ़ना चाहिए कि वास्तव में डॉ. अम्बेडकर की सोच क्या थी और वह क्यों इतना बौद्ध धर्म अपनाने को लेकर आग्रही बन गए थे। मुंबई के नरे पार्क में 27 मई, 953 की शाम को डॉ. अम्बेडकर ने अपने सार्वजनिक व्याख्यान में कहा था मैं बौद्ध धर्म का एक उपासक हूं। मैंने केवल बोध नहीं लिया है और न ही मैं केवल बोलता रहता हूं। मैं प्रत्यक्ष कृति करके दिखाऊंगा। मेरी जिंदगी के आखिरी दिनों में अब मैंने तय किया है कि मैं बुद्ध का प्रचार करूंगा। बुद्ध धर्म प्रचार की खेती मैं करूंगा और देखूंगा कि उसमें कौन-सी फसल उगती है। यह उनकी दृढ़ता बुद्ध के प्रति व बुद्ध के संदेशों के प्रति बहुत गहरी थी।

धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस उसी का परिणाम है। वैचारिक परिवर्तन यह डॉ. अम्बेडकर का नहीं था अपितु सच्चे मायने में उनका हृदय परिवर्तन था। वह बुद्धमय हो जाना चाहते थे। वह बुद्ध की शरण में रहकर एक ऐसे भारत को बनाने के लिए संकल्प ले रहे थे जिससे अस्पृश्य समाज को आत्मशक्ति व उनकी गरिमा को पुनर्जीवित किया जा सके।

इसी नरे पार्क में ही उन्होंने यह भी कहा कि मानवता की रक्षा के लिए भारत ही क्या पूरी दुनिया को आखिर इसी धर्म की ओर देखना पड़ेगा। इसीलिए बौद्ध धर्म का

बाइबिल मैंने लिखी है जो जल्द ही प्रकाशित होगा। उसे पढ़ने के बाद बौद्ध धर्म को स्वीकारना है, अथवा नहीं इस बात का फैसला करना आपके हाथ में होगा। डॉ. अम्बेडकर ने कभी भी किसी बात को लेकर फ़ोर्स नहीं किया कि आप हमारे साथ ही आएं। वह उन पर छोड़ते हैं, उनके विवेक पर छोड़ते हैं जो अस्पृश्यता की मार झेल रहे थे और उसी में दुबककर जी लेना चाहते थे। उन्होंने इसीलिए यह कहा कि जो मैं महसूस किया हूँ और जो तथ्य है धम्म और बुद्ध का उसका आप अवलोकन करें, तत्पश्चात आप निर्णय लें कि आप इसे स्वीकार करें अथवा नहीं। लेकिन इन सबके साथ डॉ. अम्बेडकर ने बहुत ही विश्वास और आत्मविश्वास के साथ यह ज़रूर कह दिया कि मेरा पूरा-पूरा विश्वास है कि केवल बुद्ध का धम्म ही विश्व को विनाश से बचा सकता है और समूचे जीवित प्राणियों का कल्याण कर सकता है। एक बार उन्होंने कहा अपना बौद्ध धर्म बताता है कि अगर मानवी जीवन सुख से, संतोष के साथ बिताना हो तो मानव को चाहिए कि वह आचरण शुद्ध रखे, अहिंसा, समता और बंधुत्व को धारण करे। इसके अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। इन बातों को गौतम बुद्ध के धर्म के सिद्धांत कहा जाता है और मैंने यही सिद्धांत अपने छह करोड़ अनुयायियों से कहे हैं। पैसों की कमी के कारण मैं आज उनके लिए कुछ भी कर नहीं पाया।

धन की कमी के कारण डॉ. अम्बेडकर बहुत से अपने स्वप्न को साकार नहीं कर पा रहे थे, इसका उन्हें अफ़सोस था। दिंसबर 1954 में वह रंगून में तीसरे जागतिक बौद्ध धर्म अधिवेशन में डॉ. अम्बेडकर गए हुए थे वहां उन्होंने यह बात कही। धम्मचक्र प्रवर्तन दिवस 14 अप्रैल 1956 को आता है। उसके पहले रंगून में अपने किए पर उनके मन में जो शांति थी वह कुछ इस प्रकार थी कि पार्लियामेंट में था तभी बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान के लिए कुछ बातें मैंने कर दी हैं। मैं भारतीय संविधान का शिल्पकार हूं। मैंने वह संविधान बनाया है। एक बात यह कि उसमें पाली भाषा के उत्थान का प्रबंध मैंने कर रखा है, और, दूसरी बात यह कि, राष्ट्राध्यक्ष के राजवाड़े के ऊपर गौतम बुद्ध के उपदेशों में से पहला चरण धम्मचक्र परिवर्तन लिखा दिया है। ब्रह्मदेश के अध्यक्ष डॉ. जी. पी. मललशेखर के ध्यान में मैंने यह बात ला दी है। देख कर उन्हें भी बड़ा अचरज लगा। तीसरी बात यह कि, भारतीय पार्लियामेंट के निशान पर भारत सरकार के प्रतीक के रूप में अशोक चक्र को संविधान में मान्यता दिला दी है। यह सब करते हुए मुझे हिंदू, मुसलमान, ईसाई और पार्लियामेंट के अन्य सदस्यों की ओर से कोई विरोध नहीं हुआ। इतना सुस्पष्ट और हर मुद्दे का विश्लेषण करने वाला कार्य मैंने पार्लियामेंट में किया था। इसके बाद वह अपने छः लाख अनुयायियों के साथ धम्मचक्र प्रवर्तन बुद्धत्व की शरण में जाते हैं। इस दिवस की यही विशेषता है। ऐसे थे डॉ. अम्बेडकर। अब आज का समाज उनके हृदय की बात समझे और वैसा आचरण करे तो निश्चय ही डॉ. अम्बेडकर जहाँ होंगे उन्हें आत्मसंतोष होगा।

सामयिक

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अंडमान-निकोबार में समुद्र तटीय विकास का औचित्य

महान निकोबार ढांचागत परियोजना के विकास पर कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने परियोजना पर नाराजगी जताते हुए उन्होंने अंग्रेजी अखबार में लिखे लेख में कहा है कि 'शोम्पेन और निकोबारी जनजातियों का अस्तित्व इस परियोजना के चलते दांव पर है। भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एक विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश की अनुमति नहीं दे सकती। हमें न्याय के इस उपहास और राष्ट्रीय मूल्यों के साथ इस विश्वासघात के विरुद्ध अपनी आवाज उठानी चाहिए।' इसके पहले राहुल गांधी ने भी जनजातीय मामलों के मंत्री जुएल ओराम को लिखे पत्र में इस परियोजना पर आपत्ति जताई थी।

दूरांचल में समुद्र तटीय क्षेत्रों में भारत विकास की दृष्टि से पीछे रहा है। उन तटीय क्षेत्रों पर भी हमने ध्यान नहीं दिया, जो देश के लिए नई आर्थिकी और चीन जैसे धोखेबाज देश से चुनौती के लिए सामरिक दृष्टि से अहम् हो सकते हैं। महान निकोबार अर्थात् अंडमान-निकोबार द्वीप समूह इस नाते अछूता है। इस परिप्रेक्ष्य में हम इस क्षेत्र को एक तो प्रसिद्ध सेल्यूलर जेल के नाम से जानते हैं, जो अब राष्ट्रीय स्मारक है। दूसरे उन जनजातियों के लिए जानते हैं, जो आज भी भारत की मुख्यधारा का हिस्सा नहीं बन पाई हैं। नतीजतन अपनी परंपरागत प्राकृतिक अवस्था में रहकर प्रकृति से ही गुजर-बसर कर रही हैं। किंतु अब इस उपेक्षित क्षेत्र की तस्वीर बदलने जा रही है। सिंगापुर की तर्ज पर निकोबार के तट का विकास केंद्र सरकार बड़ी मात्रा में धन का निवेष करके 'महान निकोबार द्वीप परियोजना' (जीएनआई) के अंतर्गत कर रही है। 75 हजार करोड़ की इस वृहद परियोजना के तहत कई परियोजनाओं को अंजाम तक पहुंचाने की तैयारी है। हालांकि परियोजना के अमल से बड़ी मात्रा में पर्यावरण को नुकसान भी होगा। परंतु पूरी दुनिया में पर्यावरण के विनाष की बुनियाद पर ही आधुनिक विकास परिणाम तक पहुंचा है।

निकोबार द्वीप समूह 10 हजार 44 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला है। बंगाल की खाड़ी में पोत परिवहन को नया आयाम देते हुए 10 हजार करोड़ रुपए की लागत से एक पोतांतरण बंदरगाह (ट्रांसशिपमेंट पोर्ट) का निर्माण करने की योजना प्रस्तावित है। यह बंदरगाह विकास से जुड़ी गतिविधियों के बड़े केंद्र के रूप में विकसित होगा। इस बंदरगाह को समुद्री जल मार्ग की प्रमुख गतिविधियों के केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। वैसे भी यह क्षेत्र दुनिया के कई पोतांतरण बंदरगाहों की तुलना में काफी प्रतिस्पर्धा दूरी पर स्थित है। बदलती जरूरतों के परिप्रेक्ष्य में पूरी दुनिया यह मानकर चल रही है कि जिस देश में हवाई अड्डों और बंदरगाहों का नेटवर्क और कनेक्टिविटि जितनी बेहतर होगी, इक्कीसवीं सदी के व्यापार में वही देश अग्रणी रहेंगे। ऐसे में इस दूरांचल में ढांचागत सुविधाएं बढ़ेंगी तो अंचल का विकास तो होगा ही, अन्य भारतीयों से समरसता भी बढ़ेगी।

इस द्वीप पर विकसित किए जा रहे माल-परिवहन के दो रणनीतिक कंटेनर पोतांतरण टर्मिनल के दो भौगोलिक फायदे होंगे। पहला यह व्यस्त पूर्वी-पश्चिमी अंतरराष्ट्रीय जहाजरानी मार्ग के निकट है। अतएव शुरू होने के बाद यह पोतांतरण की बेहतर सुविधा देगा, नतीजतन व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी। दूसरे इस क्षेत्र में आधुनिक ढंग से निर्मित जहाजों से माल उतारने-चढ़ाने की सुविधाएं बंदरगाह पर उपलब्ध होंगी, इस कारण बड़े जहाजों की आवाजाही बढ़ेगी। फिलहाल भारत के ज्यादातर बंदरगाहों पर बड़े जहाज बंदरगाह के प्लेटफॉर्म तक नहीं पहुंच पाते हैं। ये जलपोत गहरे समुद्री जल में ही चल पाते हैं, इसलिए उथले या कम गहराई वाले बंदरगाहों के प्लेटफॉर्म तक नहीं जा पाते। नतीजतन इन जहाजों को गहरे जल में ही खड़ा रखना पड़ता है। अतएव छोटे जहाजों में माल उतार व लादकर गंतव्य तक पहुंचने का अतिरिक्त श्रम करना होता है। इस प्रक्रिया में माल का खर्च बढ़ जाता है। एक देष से दूसरे देश जाने वाले मालवाहक पोत बहुत बढ़े होते हैं। इनकी ऊंचाई का एक बड़ा हिस्सा जो 50 से 100 फीट होता है, जल में ही समाया रहता है। इसलिए ये कम गहराई वाले बंदरगाहों के एकदम निकट नहीं पहुंच पाते।

अंडमान-निकोबार द्वीप प्रशासन ने कुछ समय पहले ही महान निकोबार द्वीप की दक्षिणी खाड़ी में मुक्त व्यापार भंडारण क्षेत्र विकसित करने के लिए कंटेनर पोतांतरण टर्मिनल के लिए प्रक्रिया आरंभ की है। इससे भारतीय पोत परिवहन को कोलांबो (लंका), सिंगापुर और मलेशिया के क्लांग बंदरगाह में पोतांतरण का नया विकल्प हासिल होगा। अंडमान-निकोबार का ढांचागत विकास हो जाने पर यहां मछलीपालन एक्वाकल्चर और सीवीड फॉर्मिंग का कारोबार बढ़ेगा। भारत के व्यापारी ही नहीं दुनिया के कई देश इस परिप्रेक्ष्य में व्यापार की बड़ी संभावनाएं देख रहे हैं। इस दृष्टि से पोर्टब्लेयर में एक पायलट परियोजना शुरू की गई थी, जिसके परिणाम उत्साहजनक रहे हैं। गुजरात के भावनगर स्थित 'केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान' पिछले कई वर्शों से काम कर रहा है। भारत में लगभग 8,118 किमी समुद्र तटीय क्षेत्र है। इस पूरे क्षेत्र में मछलियों और समुद्री शैवाल व एल्गी का बड़ी मात्रा में प्राकृतिक रूप से उत्पादन होता है। प्रधानमंत्री 'मत्स्य संपदा योजना' के अंतर्गत 640 करोड़ रुपए इस संपदा को सुगम खाद्य पदार्थ में बदलने के लिए जा रहे हैं। अंडमान-निकोबार से लेकर समुद्र तटीय मछुआरों की हालत भी मैदानी क्षेत्रों में फैले गरीब व पराश्रित किसानों जैसी ही है। इन तटवर्ती क्षेत्रों में मछली पकड़कर आजीविका चलाने वाले मछुआरों की संख्या करीब आठ करोड़ है। बड़ी नदियों से मछली पकड़कर गुजारा करने वाले भी करीब तीन करोड़ मछुआरे हैं। गोया, तय है अंडमान-निकोबार क्षेत्र में तटवर्ती मछुआरों को इस क्षेत्र के विकास का सीधा लाभ मिलेगा। मछली और सीवीड का कारोबार बढ़ेगा, जिससे इस समुदाय की समृद्धि बढ़ेगी।

महान अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का निकोबार क्षेत्र आरक्षित जैवमंडल (बायोस्फीयर) क्षेत्र में आता है। इसे 2013 में विशेष जैवमंडल का दर्जा दिया गया था। भारत में कुल 18 जैवमंडल क्षेत्र हैं, उनमें से एक निकोबार जनजातीय (आदिवासी) आरक्षित वन-भूमि की श्रेणी में है। इस समुद्री क्षेत्र में विशेष प्रजाति के लैदरबैक कछुए, खारे पानी में रहने वाले मगरमच्छ, निकोबारी केकड़े खाने वाले मकाक और प्रवासी पक्षी शामिल हैं। जिनका इस बहुआयामी विकास परियोजना से प्रभावित होना तय है। निर्माणाधीन पोतांतरण टर्मिनल, ऊर्जा संयंत्र, हवाई अड्डा और आवासीय भवन भी बनाए जा रहे हैं। उत्तरी और मध्य अंडमान के बीच सड़क सुविधा को बेहतर बनाने के लिए दो बड़े पुल निर्माणाधीन हैं और यहां के राष्ट्रीय राजमार्ग का चौड़ीकरण किया जा रहा है। इस सभी परियोजनाओं के लिए जो भूमियां अधिसूचित की गई हैं, उन पर खड़े 8,52,000 पेड़ों को भी काटा जाना है।

इसके तहत सैन्य-नागरिक उपयोग के लिए आवागमन के श्रेष्ठ उपाय किए जा रहे हैं। यहां के अधिकतर विकास कार्य भी नौसेना के नियंत्रण में होने हैं। महान निकोबार द्वीप देष के सुदूर और दुर्गम क्षेत्र का दक्षिणी भाग है। यहां से बंगाल की खाड़ी, दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी एशियाई सागर क्षेत्र में भारत को सामरिक और व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण व उपयोगी नियंत्रण की सुविधा इस क्षेत्र के संपूर्ण विकास के बाद हासिल हो जाने की उम्मीद है। दरअसल इसी दक्षिण सागर में चीन का जबरदस्त हस्तक्षेप है। चीन का प्रमुख व्यापार और साम्राज्यवादी दबदबा इसी मलक्का जलडमरूमध्य में सबसे ज्यादा है। लंका तो यहां से निकट है ही, इंडोनेशिया का सुमात्रा द्वीप भी बमुश्किल 90 किमी की दूरी पर है। यह स्थल मलक्का जलडमरू मध्य के पश्चिमी प्रवेश द्वार के करीब है। खाड़ी से तेल ले जाने वाले और पश्चिम में वस्तुओं का निर्यात करने वाले चीनी जहाज मलक्का जलडमरू मध्य से ही गुजरते हैं। निकोबार द्वीप पर सैन्य सामग्री व युद्धपोतों को रखने एवं बनाने के लिए डॉकयार्ड भी यहां बनाए जा सकते हैं। साफ है, जब युद्धपोत यहां खड़े किए जाएंगे तो मिसाइलें भी स्थापित करने के उपाय किए जाएंगे।

इस परियोजना के माध्यम से यह उपाय भारत की सामरिक रणनीति का हिस्सा है। इसके संपन्न हो जाने के बाद भारत चीन को न केवल कड़ा संदेश दे सकेगा, बल्कि आंखें भी दिखा सकेगा। इस परिप्रेक्ष्य में चीन यदि लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम की सीमा पर उत्पात मचाता है तो भारत मलक्का जलडमरू मध्य क्षेत्र में ईंट का जवाब पत्थर से देते हुए चीन की आर्थिक जीवन रेखा को अवरुद्ध करने की शक्ति प्राप्त कर लेगा। हाल ही में भारत ने वियतनाम और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ जिस 'लॉजिस्टिक सपोर्ट एग्रीमेंट' को अंजाम दिया है, वह रणनीतिक व सामरिक सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में ही हैं। यह समझौता सैन्य, रसद और पेट्रोलियम सुविधाओं के आदान-प्रदान से संबंधित है। अतएव यह चीन के सैन्य विस्तार और आर्थिक प्रभाव को देखते हुए बहुत महत्वपूर्ण है। सिंगापुर, हांगकांग और दुबई ने पहले ही दिखा दिया है कि किस तरह द्वीपों और समुद्री तटों को विकसित करके सामरिक और व्यापारिक महत्ता को एक साथ बढ़ाया जा सकता है। भारत निकोबार में यही कर रहा है।

बेस्ट सेलर बनने के गुर

कटाक्ष

डॉ. अतुल चतुर्वेदी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

आसान काम नहीं है माल बेचना। गंजे को कंघी बेचने जैसा कठिन है - मैनेजमेन्ट गुरू ने समझाया। एक प्रशिक्षु ने सवाल किया - लेकिन सर, ग्राहकों की शिकायतों बहुत आती हैं प्रोडक्ट को लेकर ...। इमोशनल मत बनो, माल बेचो, आगे निकलो। ये सर्विस डिपार्टमेन्ट का मामला है। डपटने के अन्दाज में गुरू ने कहा। गला खकारते हुए आगे बोले - बेचने की कला आत्मा को गिरवी रखने से शुरू होती है ...आक्रामक होकर बेचो या लिजलिजे। गुरू पूरी रौ में थे। जैसे - जैसे साल की शुरुआत होती है और बीता साल गुजरता जाता है लोग अपने किए-धरे का विवरण सोशल मिडिया पर परोसने लगते हैं। कुछ लोग अपने स्वाध्याय का आतंक बिखेरते हैं तो कुछ इस बात के लिए पश्चाताप का छिड़काव करते हैं कि उनके अरमान लाख प्रयास के बावजूद आंसुओं में बह गए। कुछ बड़े प्रकाशन समूह बेस्ट सेलर की सूची प्रकाशित करते हैं। हर एक के अपने बेस्ट सेलर हैं और अलग-अलग मापदंड। कुछ सनसनीखेज लिख कर बिक रहे हैं तो कुछ सतही लिखकर। मानीखेज लिखने की जगह मनी खेंच पर जोर है।

गोया पूंजीवाद की आहट के चलते साहित्य भी वही श्रेष्ठ हो जो बिकाऊ है। हमें टिकाऊ नहीं बिकाऊ रचनाएं चाहिए। टिकाऊ बरसों बाजार में पैर जमाए रहता है और नए माल को खपाने, नयी पैकिंग, नए रचनाकार की राह में बाधा बनता है। अब साहित्य गुनने की नहीं बिकने की चीज हैं ...मूल्य नहीं प्रोडक्ट है। ऐसा एक उत्तरआधुनिक विचारक ने सजी हुयी पुस्तकों के बीच खड़े होकर कहा। मंझोले लेखक कन्फ्यूज हैं कि रचनाकार क्या सेल्स एक्जीक्यूटिव है जो नगरी-नगरी, द्वारे-द्वारे लगा है माल बेचने में। इस आर्थिक युग में जो बिक गया वो तिर गया। जो ठिठक गया वो निबट गया। आप बिक सकते हैं या बेच सकते हैं तो आप बेस्ट सेलर हैं। सेलर का एक अर्थ है खेने वाला। जो प्रतिष्ठान की डूबती नैया को किनारे तक खे कर ले जाए। ऐसे बेचू की सबको तलाश है। कल मिल गए कृपालुशंकर जी जो पहले ठेलर थे। जी हां, जबरिया अपनी रचनाएं गोष्ठियों और मंचो से लेकर स्थानीय अखबारों तक में ठेलते थे। लेकिन एक दिन आत्मबोध हुआ और अपनी जवानी के दिनों की लंपटगिरी को उपन्यास में ढाल कर बेच दिया। अब वो के एस हो गए।

चर्चा- ए-इश्क के नाम से खूब बिका उनका इश्क। जिसमें एक सौ सत्तर गालियां और सत्रह अश्लील प्रसंग थे मस्तराम मार्का। वे रातों-रात सितारा लेखक हो गए। खांटी अनुभव, जन अनुभव बन गए। आलोचकों ने नयी भाषा, नए तेवर और नए टटके बिम्बों का उदीयमान लेखक कहा। अब दूसरी किताब पर काम कर रहे हैं शीर्षक है खट्टी यादें। क्षेत्र कोई भी हो आपको मासूमियत से बेचना आना चाहिए बस। भवानी दा के शब्दों में माफी सहित कहूं तो ...जी हां हुजूर मैं मंजन बेचता हूं, साबुन बेचता हूं। ईमान बेचता हूं, इन्श्योरेन्स प्लान बेचता हूं। सही है जो बिक पाएगा वो ही टिक पाएगा और वरना स्क्रीन से मिट जाएगा। तू तो बेच। तरह-तरह से बेच। भेष बदलकर बेच, ट्रेक बदलकर बेच। बिकना और बेचना ही युग सत्य है। चारों तरफ नजरें उठाकर देख, कौन नहीं बिक रहा ? जो ढंग से उचित दाम और समय देख कर बिक गया वो ही खेत रह गया बाकी सब काल के गर्त में समा गए। बलिदानी जत्थे का सिपाही मत बन। चौराहे पर लगी प्रतिमा से प्रेरित मत हो। वक्त की जरूरत समझ और उसमें सतहीपन की बघार लगा।

फिर रिशेपसनिस्ट की मुस्कान रूपी हाथों के सहारे सलीके से प्रस्तुत कर। मेरी मत मानिए उन्हें देखिए ...वो कैसे विचारधारा को अंधेरी गलियों में चुपचाप बेच आज सत्ता के गलियारों में चैन से करवटे बदल रहे हैं। चल इनको देख सिद्धान्त बेच कर कैसी तरक्की की है इन्होंने। हर शहर मे एक शो रूम है जनसेवक जी का। तू भी बेच जो कुछ है तेरे पास उपयोगी। लेकिन यही है कि अन्दाज खास हो। दुनिया अदा की कायल है और मजबूरियों से घायल है। तू नंगई बेच सकता है तो चल वही बेच। उसके भी खरीददार हैं। तू बेशर्मी बेच सकता है तो चल पेट उघाड़। वो भी काम आ जाएगा भुखमरी दिखाने के एन जी ओ के।

एक अनुभवी एड गुरू का कहना है कि भले ही एक बार ठुक पिट जाओ लेकिन ढंग से बिक भर जाओ। इससे शेष काम जीवन में आसान हो जाते हैं और आप बाजार का सामान हो जाते हैं, फिर मार्केटिंग में दिक्कत नहीं आती। जिसकी जितनी ऊंची बोली वो उतना ही सफल। वो उतना ही बड़ा उपदेशक और आइकान। उसका उतना बड़ा कारोबार। क्या कहा सरोकार? यह प्रगति के मार्ग में बैरियर है इससे बचें। कुछ चटपटा, जायकेदार रचें। मानसिक हाजमें की ओर न देखें। जितनी ऊंची हो सकती है फेंके। बाउंसर से लेकर बॉडी लाइन तक सबका इस बाजार में स्वागत है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

राजेंद्र बज

लेखक व्यंग्यकार हैं।

कोई 'कुछ तो भी है', आखिर इसके मायने क्या हैं ?

हर कोई आदमी किसी-किसी के लिए सब कुछ होता है, लेकिन बदलते जमाने की हवा के चलते कालांतर में वह 'कुछ तो भी' करार दे दिया जाता है। यह उपाधि वही देते हैं जिनके लिए किसी समय वह सब कुछ हुआ करता था। नई पीढ़ी तो इतनी एडवांस हो चली है कि उसकी नजरों में 'क्या यार पापा, आप इतना भी नहीं समझते'। की मुद्रा में खिलाने-पिलाने और पालने-पोसने वालों के प्रति उपहास भरी नजरे अपने कुल के दुर्भाग्य पर रोती नजर आती हैं।

दरअसल हम तरक्की की इतनी बड़ी कीमत चुका रहे हैं कि अपनी कीमत ही भूलते चले जा रहे हैं। संस्कृति अनमोल होती है, लेकिन कोड़ी के भाव का खरीदार सामने नहीं आता। किसी इंग्लिश कॉन्वेंट स्कूल के स्टूडेंट से श्रवण कुमार का किस्सा पूछो तो वह आंखें फाड़ लेते हैं। वे तो 'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' की हवाखोरी करते रहे हैं। भला बेचारे श्रवण कुमार को कैसे याद कर सकते हैं ? और उन्हें बताएं भी कौन ? क्योंकि जिनके हाथों में उसके भविष्य निर्माण की बागडोर है, शायद वे भी नहीं जानते होंगे कि श्रवण कुमार कौन थे ?

आजकल के बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित्र के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं, साहित्य संस्कृति से उनका दूर का भी नाता नहीं, मोबाइल और लैपटॉप पर वीडियो गेम और वेब सीरीज से ही फुर्सत नहीं, और तो और रिश्तों की मर्यादा का भी कोई विशेष भान नहीं। केवल और केवल अच्छा पैकेज और अच्छा करियर बनाने की दिशा में ही वे प्रण-प्राण से जुटे रहते हैं। वैसे इसमें बच्चों का कोई दोष नहीं होता। कच्ची मिट्टी को आकार देकर पकाने की तरह बच्चों को संस्कार देकर सही राह दिखाने की जिम्मेदारी तो अभिभावकों की ही हुआ करती है। खैर।

परिवर्तन के दौर में ऐसे परिवर्तन पर बांकेलाल बेहद खफा नजर आते थे। बांकेलाल अपने बचपन के जमाने में माड़साब के हाथों बहुत बार पीटे जा चुके थे। शायद इसीलिए संस्कार तो उनके रोम-रोम में कूट-कूट कर भरे हुए थे। जमाने भर के थपेड़ों ने उन्हें हर एक दृष्टि से परिपक्व इंसान बना दिया था। किताबी ज्ञान भले ही कम हो, लेकिन व्यावहारिक ज्ञान में उनका कोई सानी नहीं था। तर्कबुद्धि भी विलक्षण थी और प्रत्युत्पन्नमति भी। लेकिन लोग क्या कहेंगे, इसके चलते अपने इकलौते बच्चे के स्वर्णिम भविष्य निर्माण की दृष्टि से उन्होंने उसे इंग्लिश कॉन्वेंट स्कूल में भर्ती कराया था।

शहर भी भेजा और पेट पर पट्टी बांधकर उसकी उच्चतम शिक्षा के लिए ऊंची से ऊची कोचिंग क्लास की महंगी से महंगी फीस भी चुकाई थी। उनके मन की मुराद तो एक दिन पूरी हो गई। देखते ही देखते बच्चा महानगरवासी हो गया। लेकिन अपने 'स्टैंडर्ड' के अनुरूप मॉम और डैड को न पाकर उनके प्रति कन्नी काटने लगा। उसके स्टैंडर्ड सर्कल में उसका भी एक स्टैंडर्ड जो था। ऐसे में भला मखमली जिंदगी में टाट का पैबंद लगाकर उसे कोई अपनी हंसी थोड़े ही करवानी होती है !

जो दूध का जला हो,वह छाछ भी फूंक कर ही पिएगा। इसके चलते उनका कहना था कि बच्चा जब इंग्लिश में गिटिर-पिटिर करना सीखे उसके पूर्व ही उसे हमें अपनी गौरवशाली सभ्यता और संस्कृति का पाठ पढ़ा देना चाहिए। इसके पीछे उनका तर्क रहा करता था कि होली की हुड़दंग में काले पीले रंग में रंगने के पूर्व बच्चों पर तेल की मालिश के साथ गंगाजल के छींटे मार देने से उसके तन -बदन और मन में कलुषित रंग नहीं चढ़ पाएगा। जमाने भर ने उस पर जो रंग चोपड़ा होंगा, साधारण स्नान मात्र से उतर जाएगा।

मुद्दे की बात यह कि नई पीढ़ी के मन मे पुरानी पीढ़ी का मान 'कुछ तो भी' होकर रह गया है। वैसे अपवाद होते है, आज के दौर में भी श्रवण कुमार होते हैं, लेकिन ऐसे श्रवण कुमार बहुत ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं होते। ऐसा भी नहीं है कि पढ़ा-लिखा होना संस्कारों से विमुख होने का कारण बन जाता है। बेशक पढ़ा-लिखा होना आज के दौर की पहली जरूरत है। लेकिन पहले से भी पहली जरूरत तो हमें अपने पूर्वजों के उच्च स्तरीय आदर्श और संस्कारों का बीजारोपण भावी पीढ़ी के अंतर्मन में स्थापित करने की नितांत आवश्यकता है।

प्रशासनिक उत्तरदायित्व

वीरेंद्र कुमार पालीवाल

लेखक, सेवानिवृत्त रेलवे अधिकारी टिप्पणीकार हैं।

कर्मचारी को दंड का रेलवे का नियम सभी विभागों में भी लागू हो

औपनिवेशिक विरासत से आधुनिक प्रशासन तक इस नियम की जड़ें ब्रिटिश काल में हैं। अंग्रेज़ों ने भारतीय रेल की स्थापना सैन्य एवं साम्राज्यिक उद्देश्यों से की थी जो सेना, हथियार, और कोयले जैसे संसाधनों के परिवहन की सुनिश्चितता से जुड़ा था । उन्हें केवल आदेशपालक कर्मचारी चाहिए थे, इसलिए रेलवे में 'कठोर अनुशासन' को सर्वोपरि रखा गया। यहाँ प्रश्न करने का नहीं, आदेश मानने का वातावरण था। लेकिन स्वतंत्र भारत में, जहाँ रेलवे अब जनता की सेवा के लिए कार्य करता है, यह औपनिवेशिक अनुशासन आज लोकतांत्रिक न्याय भावना से मेल नहीं खाता।

भारतीय रेल, देश की सबसे बड़ी और सबसे अनुशासित सेवा प्रणाली है। लाखों कर्मचारियों के बीच कार्य का ऐसा तालमेल और जिम्मेदारी शायद किसी और सरकारी तंत्र में देखने को नहीं मिलती। रेलवे में अनुशासन केवल नीतिगत शब्द नहीं, बल्कि दैनिक जीवन का हिस्सा होने का एक कारण यह भी है कि रेलवे में सबसे कठोर अनुशासन नियमों में से एक नियम 14(ii) लागू है। रेल कर्मचारी(अनुशासन एवं अपील) नियम , 1968 का यह प्रावधान प्रशासन को यह अधिकार देता है कि वह किसी कर्मचारी को बिना विभागीय जांच के सीधे दंडित कर सकता है या बर्खास्त कर सकता है । रेल अधिकारी यदि संतुष्ट हो जाए कि नियमित जांच 'यावहारिक रूप से संभव नहीं है।' अर्थात् यदि किसी कर्मचारी का व्यवहार ऐसा हो कि जांच बाधित हो रही है या गवाह भयभीत हैं, तो प्रशासन बिना सुनवाई के भी कार्रवाई कर सकता है। इसी नियम के आधार पर 1974 की रेल हड़ताल के दौरान हज़ारों रेल कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया गया था । हालाँकि कई बार इस नियम के दुरुपयोग की ख़बरें भी सामने आती रहती हैं कुछ माह पूर्व एक रेल कर्मचारी को केवल इस बात पर नियम 14(ii) का नोटिस जारी कर दिया गया क्योंकि उसने स्थानांतरण आदेश पर तत्काल अमल नहीं किया था ।

औपनिवेशिक विरासत से आधुनिक प्रशासन तक इस नियम की जड़ें ब्रिटिश काल में हैं। अंग्रेज़ों ने भारतीय रेल की स्थापना सैन्य एवं साम्राज्यिक उद्देश्यों से की थी जो सेना, हथियार, और कोयले जैसे संसाधनों के परिवहन की सुनिश्चितता से जुड़ा था । उन्हें केवल आदेशपालक कर्मचारी चाहिए थे, इसलिए रेलवे में 'कठोर अनुशासन' को सर्वोपरि रखा गया। यहाँ प्रश्न करने का नहीं, आदेश मानने का वातावरण था। लेकिन स्वतंत्र भारत में, जहाँ रेलवे अब जनता की सेवा के लिए कार्य करता है, यह औपनिवेशिक अनुशासन आज लोकतांत्रिक न्याय भावना से मेल नहीं खाता। फिर भी, सरकार इसे अब भी आवश्यक मानती है। यदि यह सच है, तो फिर सवाल यह उठना स्वाभाविक है कि ऐसा अनुशासन केवल रेलवे में ही क्यों लागू है, अन्य सरकारी विभागों में क्यों नहीं जहां अनुशासनहीनता एवं भ्रष्टाचार का बोलबाला है और विधायिका और देश की जनता को इसका भुगतान करना पड़ रहा है । भारत में

हर कुछ महीनों में ऐसे उदाहरण सामने आते हैं जहाँ सरकारी तंत्र की लापरवाही, भ्रष्टाचार और असंवेदनशीलता से जनता को भारी नुकसान उठाना पड़ता है जैसे खराब कफ सिरप के कारण बच्चों की मौतें जो केवल कंपनियों की गलती नहीं, बल्कि नियामक संस्थाओं की विफल निगरानी का परिणाम थी, भ्रष्ट डिज़ाइनर, इंजीनियर, ठेकेदार और निरीक्षण अधिकारी जिनके कारण करोड़ों रुपये के पुल और सरकारी इमारतें कुछ ही महीनों में ढह जाती हैं, पेपर लीक, भर्ती घोटाले, फर्जी प्रमाणपत्रों से भरी नियुक्तियाँ ।यह प्रशासनिक लापरवाही नहीं तो और क्या है और ऊपर से टालमटोल रवैया, सामंती सोच, और कई बार अपराधियों से मिलीभगत यह सब जो सार्वजनिक तंत्र को खोखला कर रहे हैं। इन सबके बीच शायद ही किसी अधिकारी को विभागीय जांच या त्वरित अनुशासनात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ता है। महीनों और वर्षों तक जांचें लटकती रहती हैं, फाइलें दबाई जाती हैं, और जनता का विश्वास धीरे-धीरे समाप्त होता जाता है।

रेलवे में अनुशासन, दूसरों में उदारता – यह दोहरा मापदंड क्यों? भारतीय रेल में एक मामूली अनुशासनहीनता जैसे किसी अधिकारी से कठोर शब्द बोल देना, या कार्य में विलंब भी बड़ी कार्रवाई का कारण बन जाता है, वहीं किसी पुल के गिरने से दर्जनों जानें चली जाती हैं, या जहाँ करोड़ों का सार्वजनिक धन भ्रष्टाचार में समा जाता है, वहाँ नियम 14(ii) जैसा कठोर प्रावधान लागू क्यों नहीं ? यदि रेलवे में 'अनुशासन बनाए रखने के लिए' नियम 14(ii) आवश्यक है, तो इस जैसे नियम समान रूप से उन सभी विभागों में भी लागू होना चाहिए जहाँ भ्रष्टाचार और लापरवाही से देश और समाज को क्षति पहुँच रही है चाहे वह स्वास्थ्य विभाग हो, निर्माण विभाग, शिक्षा विभाग, पुलिस, या प्रशासनिक सेवा।

अनुशासन का वास्तविक अर्थ अनुशासन का अर्थ भय पैदा करना नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का बोध कराना है। रेलवे के कर्मचारी हर परिस्थिति में काम करते हैं , बारिश, ठंड, त्यौहार, रात्रि-काल और एक छोटी भूल पर भी उनके विरुद्ध नियम 14(ii) लागू हो सकता है। जबकि अन्य विभागों में महीनों तक 'निलंबन के बाद बहाली' और 'चर्चा में दफन फाइलें' होती रहती हैं। समय आ गया है कि यह विरोधाभास अब समाप्त होना चाहिए। यदि सरकार मानती है कि रेलवे का नियम 14(ii) एक प्रभावी और आवश्यक अनुशासनिक प्रावधान है, तो इसे केवल रेलवे तक सीमित रखना अन्याय और असंतुलन है।

समान अनुशासन, समान उत्तरदायित्व आज आवश्यकता है कि केंद्र सरकार नियम 14(ii) जैसी व्यवस्था को सभी केंद्रीय और राज्य सेवाओं के अधिकारियों और कर्मचारियों पर एक समान अनुशासनिक नीति के रूप में लागू करे। जनता को नुकसान केवल ट्रेन के विलंब से नहीं होता, बल्कि उन पुलों, अस्पतालों, दवाओं और योजनाओं से भी होता है जिनमें अधिकारीयों की आपराधिक लापरवाही और भ्रष्टाचार छिपा होता है। जब रेलवे का स्टेशन मास्टर, लोको पायलट या गार्ड एक क्षणिक गलती के लिए भी जवाबदेह ठहराया जा सकता है, तो एक भ्रष्ट इंजीनियर, निष्क्रिय अधिकारी या मिलीभगत करने वाला अफसर 'जांच लंबित' जैसे बचाव का बहाना क्यों पाए।

भारतीय रेल ने अनुशासन को एक जीवनशैली बनाया है परंतु देश के अन्य विभागों में यही अनुशासन 'कठोरता' कहकर टाल दिया जाता है। अब समय है कि नियम 14(ii) को रेलवे की परिधि से निकालकर पूरे सरकारी ढांचे में लागू करने पर विचार हो,क्योंकि जब तक अनुशासन और उत्तरदायित्व सभी पर समान रूप से लागू नहीं होंगे, तब तक भ्रष्टाचार, लापरवाही और असंवेदनशीलता से जनता को राहत नहीं मिलेगी। रेलवे ने यह सिद्ध किया है कि कठोर अनुशासन से प्रणाली ढहती नहीं, बल्कि मज़बूत होती है। अब केंद्र और राज्य सरकारों की प्रशासनिक व्यवस्था को भी यही सबक सीखने और सिखाने की आवश्यकता है कि अनुशासन सबके लिए समान है चाहे वह किसी भी स्तर का अधिकारी या कर्मचारी क्यों ना हो और तभी 'जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए' बने शासन में देश की जनता सम्मान और सुकून से जी सकेगी।

पर्यावरण

प्रमोद दीक्षित मलय

गूंजता रहे प्रवासी पक्षियों का मधुर कलरव

मेरा बचपन गांव में बीता है और शहर में बसने के बावजूद आज भी अपने गांव से किसी न किसी रूप में रिश्ते की डोर जुड़ी हुई है। हमारा घर गांव की मुख्य बस्ती में तो था ही, किंतु खेती-बाड़ी की सुविधा की दृष्टि से अपने आम के बगीचा समीप खेतों के बीच एक पुरवा (मजरा) बना लिया था। दूर-दूर तक धान-गेहूं की फसलों से लहराते खेत, मेंड़ों पर पीले फूलों वाली टोपी पहने अरहर की कतार और खेतों की माटी को अपनी जड़ों से जकड़े साधनारत कैथा, महुआ, पीपल, बेर, बरगद, शीशम के हरे-भरे तपस्वी वृक्ष तथा गगन को चूमते लम्बे मजबूत बांस। मकान से जुड़ी हुई एक बड़ी तलैया जिसके निर्मल जल में अठखेलियां करती मछलियां मन मोह लेतीं। गहरे छिछले खेतों में प्राकृतिक रूप से बन गयी बड़ी पोखर। तलैया में कोई भीटा या मेंड़ नहीं होने से बारिश के बाद भी खेतों का पानी रिस-रिस कर भरता रहता और उसमें वर्ष भर पानी भरा रहता। पोखर एक प्रकार का गहराई वाला खेत था जिसमें होली के कुछ बाद तक पानी बना रहता। इससे खेतों और वातावरण में नमी बनी रहती और मौसम सुहावना। तलैया के पानी में हम लोग बर्तन धुलते, स्नान करते और भात रांधने के लिए दौरी (बांस की एक निश्चित आकार की विशेष टोकरी) भर चावल उसी जल में धोएं जाते। तलैया में किसी जानवर या अन्य आदमियों का आना-जाना नहीं था। बरसात में तलैया के जल में करेमू (एक बरसाती जलीय पौधा) की बेल फैल जाती जिसकी पत्तियों से निर्बल वर्ग की महिलाएं साग बनातीं और हम बच्चे उसकी पतली शाख से टुकड़ा तोड़ पिपहरी वाली सीटी बना पिर्र-पिर्र बजाते दौड़ते। पाठक सोच रहे होंगे कि मैं यह क्यों लिख रहा हूं, लेख का विषय तो प्रवासी पक्षी है। पाठकों का सोचना सही है, पर मेरे लेख का एक सिरा इसी तलैया से मजबूती से जुड़ा है, क्योंकि इसी तलैया पर जाड़ों के मौसम में मैंने दर्जनों प्रवासी पक्षियों को डेरा जमाते, जल पर तैरते और मोहक संगीत बिखरते देखा-सुना है। हालांकि तब मुझे बिलकुल भी मालूम नहीं था कि जाड़ों में आने वाले ये पक्षी दूर देशों से आने वाले प्रवासी पक्षी हैं, यह जानकारी बहुत बाद में हुई जब शिक्षक बन बच्चों के बीच काम करने का अवसर मिला। तब आषाढ़ में धान की बेड़ लग जाती और नवरात्र आते-आते पौधों पर दूधिया दाना बनने लगता। जल्दी पकने वाली धान की किस्में दीपावली तक पकने लगतीं और एक मीठी-भीनी महक वातावरण में घुलने लगती। धान के खेतों के भरे पानी में छोटी-छोटी मछलियां सूरज की रोशनी में चांदी सा चमकती बहती रहतीं, लिसलिसे घोंघे अलसाये से रेंगते और केकड़े मेड़ की निचली गीली दरारों में मिट्टी के घरौंदे बनाते रहते। तलैया और पोखर में तो कुछ बड़ी मछलियों और केकड़ों का राज रहता। पोखर और तलैया में अपने आप उग आने वाला धान, जिसे हमारे यहां पसही का धान कहा जाता था, इन दिनों पक जाता था। तो बस, यही तो चाहिए था प्रवासी पक्षियों को। पर्याप्त भोजन, सुरक्षित आवास, प्रजनन हेतु अनुकूल जलवायु।

दीपावली तक तलैया पर रंग-बिरंगे, धूसर, काले-सफेद छोटे-बड़े पक्षियों का कब्जा हो जाता और होली तक बना रहता। गर्मी शुरू होते गेहूं की फसल भी पक चुकी होती, खेत खाली होने लगते, आसमान कुछ-दहकने लगता, पेड़ों की छाया सिकुड़ने लगती, तलैया के चतुर्दिक उगे घास-खरपतवार सूख रहे होते, तलैया में मछलियों की धमाचौकड़ी भी शांत हो जाती तब इन प्रवासी पक्षियों की वापसी उड़ान शुरू हो जाती और एक सप्ताह के अंदर तलैया बेजान, नीरस और उदास हो जाती जैसे किसी मां के बेटे-बेटियां कमाने-खाने परदेश निकल जाते हैं। तब तलैया शुष्क आंखों से अगले वर्ष उनके आने की बाट जोहती, राह तकती। हमें भी कुछ अच्छा नहीं लगता। केवल बच्चों ही नहीं बल्कि बड़े-बुजुर्गों का रिश्ता भी प्रवासी पक्षियों से अपनेपन का रहता। कोई भी व्यक्ति किसी भी पक्षी को हानि नहीं पहुंचाते थे बल्कि कुत्ते-बिल्ली एवं सियार-लोमड़ी से बचाव करते थे।

अगर कोई कुत्ता-सियार किसी पक्षी का शिकार कर लेता था तो कई दिन तक घर-परिवार में हम बच्चों को लापरवाही के लिए डांटा जाता और घर में मातम सा पसरा रहता। यह सह-अस्तित्व का भाव था, जो बिना पाठ पढ़ाये केवल आचरण-व्यवहार द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पनपता रहता था। ये पक्षी तलैया में हम लोगों के नहाते समय भी बिना डरे बिलकुल आसपास तैरते और भोजन चुगते रहते। इन पक्षियों में सबसे बड़ा पक्षी सारस होता था, सफेद या कुछ-कुछ बादलों के रंग सा, लम्बी लाल चोंच और बड़ी-ऊंची टांगें। पूरी ऊंचाई हम बच्चों के बराबर या कुछ अधिक ही। सारस हमेशा जोड़े में होते और जब पंख फैलाकर उड़ान भरते तो लगता कि कोई छोटा वायुयान टेकऑफ कर रहा हो। उसके पंखों की फड़फड़ाहट का ध्वनि कंपन हम महसूस कर सकते थे। उसकी आवाज दूर से ही उसके आने का संकेत कर देती। अन्य पक्षियों में छोटी चोंच वाले झक सफेद बगुले होते लगता कि छोटे-छोटे बच्चे बर्फ की चादर ओढ़े बैठे हों, कुछ लगभग दो-तीन फीट ऊंचाई वाले एक टांग पर खड़े मंझोली चोंच, सफेद पेट एवं पूरे काले पंखों वाले बड़े बगुले मानों कोई बूढ़ा सफेद कुर्ता पहने ऊपर से काले ऊन का कम्बल लपेटे भजन कर रहा हो। हमारे लिए सभी पक्षी बगुले ही थे जिसे हम अपनी बोली में 'बक्का' कहते थे, उनके वैज्ञानिक नाम भी होते हैं, यह पता न था। कुछ बगुले बहुत प्यारे सुंदर बादामी, बैंगनी, हल्के लाल, आसमानी रंग के होते, लगता जैसे किसी त्योहार के लिए नये रंग-बिरंगे कपड़े सिलवाकर पहन लिए हों।

ये स्थानीय या विदेशी प्रवासी पक्षी साल दर साल आते रहते और खुशियां बांटते। तब पता नहीं था कि ये पक्षी दूसरे देशों से आते हैं जहां कड़ाके की ठंड पड़ती है, धरती पर बर्फ की चादर बिछ जाती है। दाना-पानी के स्रोत बंद हो जाते हैं तब वे गर्म देशों की ओर उड़ पड़ते। भारत उनकी पसंद का देश होता जहां की जलवायु, भोजन एवं सुरक्षा उनके अनुकूल होती। सबसे बड़ी बात पक्षियों के प्रति आम जन में प्यार एवं अपनेपन का भाव पक्षियों को भारत आने को खींचता और वे लगातार एक ही स्थान में पीढ़ी-दर-पीढ़ी हजारों किमी की दूरी तय कर निश्चित समय पर पहुंच जाते। विशाल जलाशय, झीलें, तालाब, नदियां और गांव-गांव के छोटे-बड़े ताल-तलैया एवं पोखर इनके आश्रम स्थल होते।

प्रवासी पक्षी किसानों के मीत बन फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीट-पतंगों एवं मकड़ियों को चट कर जाते। फसलों के परागण और बीजों के बिखराव में सहायक बनते।

कालचक्र कहां थमता है ।समय बदला और मन एवं परिस्थितियां भी। मानव एवं प्रवासी पक्षियों के बीच पनपा सह-अस्तित्व का सेतु अब जर्जर हो रहा है। मांस के शौकीन लोग इनका शिकार करते हैं। अवैध रेत खनन से पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बिगड़ा है। पक्षियों के प्राकृतिक पर्यावास क्षतिग्रस्त हुए हैं। फसलों में अत्यधिक कीटनाशक दवा छिड़काव से भोजन का संकट भी उपस्थित हुआ है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते क्षेत्रीय जलवायु में बदलाव हुआ है। शिकारी जानवरों एवं पक्षियों द्वारा भी प्रवासी पक्षियों के अंडों एवं चूजों को नष्ट किया जा रहा है। प्रवासी पक्षी अपने गंतव्य तक पहुंचने हेतु हमेशा एक ही रास्ते का चयन करते हैं, किंतु अब बड़ी इमारतें और टावर बन जाने से वे दिग्भ्रमित भी हो रहे हैं। हालांकि सरकारों, पक्षी कल्याण हेतु समर्पित संस्थाओं और पक्षी प्रेमियों द्वारा जलाशयों पर सुरक्षा एवं संरक्षण हेतु आवश्यक उपाय किये जा रहे हैं कि 29 देशों के प्रवासी पक्षियों हेतु अनुकूल शहर-गांव एवं समाज बना पायें। पर जब तक हम आमजन का मन प्रवासी पक्षियों ही नहीं बल्कि सभी पक्षियों के प्रति आत्मीय एवं संवेदनशील नहीं बना पाते तब तक कोई भी उपाय और प्रयत्न पूर्णत: फलीभूत नहीं हो पाएंगे। मई एवं अक्टूबर के द्वितीय शनिवार को मनाया जाने वाला विश्व प्रवासी पक्षी दिवस तभी सार्थक और अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा जब बाल्यकाल से ही हम परिवार एवं विद्यालयों में बच्चों को पक्षियों के प्रति करुणा का व्यवहार करना सिखाएं और यह तभी सम्भव होगा जब हम बड़े पक्षी प्रेम का आचरण अपने जीवन में करते दिखाई देंगे, तभी प्रवासी पक्षियों का मधुर कलरव गूंजता रहेगा।

विश्लेषण

प्रभुनाथ शुक्ल

लेखक पत्रकार हैं।

मायावती का नया आगाज क्या होगा अंजाम ?

अखिलेश यादव समाजवादी पार्टी को मजबूत करने के लिए जूटे हैं और सत्ता पक्ष के काम का अक्सर विरोध करते दिखते हैं। आजम खान की जेल से रिहाई के बाद अखिलेश यादव खुद रामपुर जाकर उनसे मिले। इसके पीछे तर्क दिया जा रहा था कि आजम खान समाजवादी पार्टी से नाराज है और वह बसपा में जा सकते हैं। इन सब अटकलें को देखकर अखिलेश यादव को आखिर आजम खान के दरबार में माथा टेकना पड़ा।

प्रदेश की राजनीति में नए क्षितिज उभर रहे हैं। राज्य विधानसभा चुनाव 2027 को लेकर सत्ता और विपक्ष अपनी-अपनी कमर कसता दिख रहा है। हालांकि अभी चुनाव में वक्त है, लेकिन राजनैतिक दल माहौल बनाना शुरू कर दिया है। भाजपा जहां सत्ता खोना नहीं चाहती वहीं उत्तर प्रदेश का मुख्य विपक्षीय दल समाजवादी पार्टी, पीडीए को साधने में जुटा है। लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का बेहतर प्रदर्शन रहा था। इस प्रदर्शन ने भारतीय जनता पार्टी की नींद उड़ा दिया था। समाजवादी पार्टी अगर यही प्रदर्शन दोहराती है तो विधानसभा चुनाव में भाजपा के लिए मुश्किल खड़ी हो सकती है।

अखिलेश यादव समाजवादी पार्टी को मजबूत करने के लिए जूटे हैं और सत्ता पक्ष के काम का अक्सर विरोध करते दिखते हैं। आजम खान की जेल से रिहाई के बाद अखिलेश यादव खुद रामपुर जाकर उनसे मिले। इसके पीछे तर्क दिया जा रहा था कि आजम खान समाजवादी पार्टी से नाराज है और वह बसपा में जा सकते हैं। इन सब अटकलें को देखकर अखिलेश यादव को आखिर आजम खान के दरबार में माथा टेकना पड़ा।

आजम खान के सियासी शरण में जाना अखिलेश यादव की मजबूरी है। क्योंकि उत्तर प्रदेश में मुस्लिम और पिछड़ा वर्ग ही उनका जनाधार है। पिछड़ा वर्ग में भी सभी जातियों को हम शामिल नहीं कर सकते हैं। लेकिन यादव और मुसलमान अखिलेश के साथ खड़े रहते हैं। आजम खान समाजवादी पार्टी के बड़े चेहरे हैं। समाजवादी पार्टी से अगर आजम खान किनारा करते तो अखिलेश यादव की राजनीतिक पकड़ बेहद कमजोर हो जाती। ऐसी स्थिति में मुस्लिम वोट बैंक को साधने के लिए आजम शरणम गच्छामि होना पड़ा।

आजम का प्रभाव पश्चिमी यूपी में मजबूत है। यूपी में 2011 जनगणना के अनुसार, मुसलमानों की कुल आबादी तकरीबन 20 फिसदी है। 2025 अनुमान है कि यह आबादी तकरीबन साढ़े चार करोड़ पहुंच जाएगी। सबसे अहम सवाल उठता है कि क्या मुसलमान आजम खान को अपना नेता मानता है। हालांकि यह कहना पूरी तरह से गलत होगा कि यूपी का मुसलमान आजम के साथ पूरी तरह खड़ा है। मुसलमान में कई नेता है और सबके अपने-अपने समर्थक। सिर्फ आजम खान के इशारे पर मुसलमान नहीं खड़ा होगा।

हालांकि उत्तर प्रदेश की राजनीति में मुसलमानों की अहमियत को सिरे से खारिज नहीं किया जा सकता है। इसकी वजह है कि प्रदेश के सभी राजनीतिक दल मुसलमान वोट बैंक साधने के लिए उनके साथ खड़े रहते हैं। हालांकि यह भी सच है मुसलमान भारतीय जनता पार्टी को भी पड़े पैमाने वोटिंग करता है। भाजपा साल 2017 के चुनाव में पश्चिम के मुस्लिम बहुल इलाकों में भी हुआ अपना परचम लहरा चुकी है।

उत्तर प्रदेश की 403 विधानसभा सीटों में तकरीबन 55 से 60 सीटों के आसपास मुसलमान का दबदबा है। साल 2017 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने यहां कल 82 सीटों में 62 पर विजय हासिल किया था। यह चौंकाने वाला आंकड़ा था और राजनीतिक विश्लेषकों को चक्कर में डाल दिया था मुस्लिम सभी सियासी मिथक को तोड़ते हुए भारतीय जनता पार्टी के साथ खड़े मिले।

उत्तर प्रदेश की लोकसभा में 80 सीटों में तकरीबन 20 से 22 सीटों पर मुसलमानों का प्रभाव है। इसमें सहारनपुर बिजनौर, मुरादाबाद, अमरोहा, संभल और मुजफ्फरनगर एवं रामपुर जैसे संसदीय इलाके शामिल। यही कारण है कि अखिलेश यादव को आजम खान से मिलने रामपुर हवेली जाना पड़ा। समाजवादी पार्टी से अगर मुस्लिम नाराज होता है तो उसके लिए बड़ी चुनौती होगी। सवाल यह भी है कि वह नाराज होकर भी कहाँ जाएगा। लेकिन पूरा मुसलमान सिर्फ समाजवादी पार्टी के साथ है ऐसा कहना भी मुश्किल है। वह मायावती की बहुजन समाज पार्टी और भाजपा के साथ भी खड़ा मिलता है। चुनाव में यह भी ट्रेंड देखा गया है कि मुसलमान परिस्थितियों को देखते हुए अपनी वोटिंग करता है।

उत्तर प्रदेश में उधर एक और सियासी घटना ने सपा के लिए नई चुनौती का जन्म दिया है। लखनऊ में काशीराम परिनिर्वाण दिवस पर बहुजन समाज पार्टी की मुखिया मायावती की तरफ से आयोजित रैली से समाजवादी पार्टी की नींद उड़ गई है। उधर दलितों का मसीहा बनने की कोशिश कर रहे चंद्रशेखर आजाद रावण भी उलझन में है। क्योंकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी कमजोर स्थिति में नहीं। तकरीबन 10 साल बाद मायावती की राजनीति सक्रियता ने उनके सपने पर पानी डाल दिया है। लखनऊ में उमड़ी दलितों की भीड़ ने साबित कर दिया है कि मायावती में दलित पूरी तरह आस्था रखता है। बसपा कैडर बेस पार्टी है बगैर प्रचार के इतनी भारी भीड़ सब की नींद उड़ा दी है।

मायावती ने जहां भाजपा की जमकर प्रशंसा किया वहीं अखिलेश यादव पर निशान साधा और उनकी सरकार में किए गए कार्यों को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि दलितों के साथ समाजवादी पार्टी सरकार ने दोगली राजनीति की। उत्तर प्रदेश में एक बार फिर मायावती की सक्रियता ने अखिलेश यादव के पीडीएफ फार्मूले को झटका दिया है। मायावती की कुछ वर्षो की निष्क्रियता से भाजपा केंद्र और राज्य सरकार की नीतियों के बदौलत दलित को अपनी तरफ मोड़ने में कुछ कमयाब दिखीं।

हालांकि जमीनी सच्चाई यही है इस भीड़ से बसपा और दलित भले खुश हों कीझ्र बसपा तेजी से उभर रहीं है लेकिन सिर्फ दलित वोट से वह राजनीति में वापसी नहीं कर सकती। क्योंकि मौजूदा वक्त गठबंधन का दौर है और भारतीय जनता पार्टी इसमें सबसे सशक्त दिखाई पड़ती है। केंद्र और राज्य में उसकी सत्ता होने से इसका सीधा लाभ मिल रहा है। छोटे दल भाजपा की सत्ता में सहभागी बनकर मलाई काट रहे हैं।

राजनीतिक गलियारों में यह भी माना जा रहा है कि उत्तर प्रदेश में भाजपा की पकड़ कमजोर हो रही थी। माना जा रहा था कि 2027 के चुनाव में भाजपा की राह आसान नहीं होगी। जिसकी वजह से भजपा ने मायावती को री-लांच किया है। क्योंकि मायावती ने इस रैली के दौरान भाजपा और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की जमकर तारीफ किया। जबकि अखिलेश यादव पर खूब बरसी। रैली ने समाजवादी पार्टी के लिए चुनौती बढ़ा दी है और बसपा जितना उत्तर प्रदेश में मजबूत होगी आने वाले 2027 के चुनाव में भाजपा की राह उतनी ही आसान होगी।

भोपाल में छात्र उदित गायकी की निर्मम हत्या पर फूटा जनाक्रोश

धार के खिलाड़ी एशियन गेम्स के ट्रायल में भाग लेंगे

धार। कराटे इंडिया द्वारा विगत दिनों इंदौर के डेली कॉलेज में आयोजित सीनियर राष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें देशभर के विभिन्न राज्यों से आए खिलाड़ियों ने भाग लिया। विजय सोलंकी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में

कराटे एसोसिएशन धार के 5 खिलाड़ियों ने भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया । जिसमें स्वर्ण पदक विजेता सौम्या राठौर राजवीर राठौर, रजत पदक विजेता सुनील जामोद,कांस्य पदक विजेता यशराज पटेल साथ ही यश रावत ने शानदार प्रदर्शन किया। पदक प्राप्त विजेता खिलाड़ी आगामी एशियन गेम्स सिलेक्शन ट्रायल भारतीय खेल प्राधिकरण शिलांग में भाग लेंगे। खिलाड़ियों की उपलब्धि पर डॉ अजेश माइकल,प्रदीप जोशी,सुरेश परमार, ॠतुराज देवड़ा, राम सोलंकी,पंकज सोलंकी, अजय परमार ने बधाई दी।

बबनलाल अग्रवाल बने धार जिला कैट के जिला अध्यक्ष

धार। धार जिला कैट के प्रदेश मंत्री महेशचन्द्र माहेश्वरी की अनुशंसा पर प्रदेश अध्यक्ष सुनील अग्रवाल भोपाल ने जिला अध्यक्ष बबनलाल अग्रवाल कार्यकारी अध्यक्ष विष्णु राठौड (V.K.) जिला महामंत्री जे.पी. सिंग व प्रवीण गुप्ता, उपाध्यक्ष

कैलाश मुकाती (VIP) मनावर, कीकाभाई पीठावाले धार, अमित जैन यश कॉलेज बदनावर, नारायण जोशी पराग, संजय भोलाराम भिडोदीया मिडिया प्रभारी प्रवीण उज्जैनकर, कोषाध्यक्ष शुभम अग्रवाल, जिला मंत्री प्रवीण टांक, मनीष ठाकुर, भगवान खण्डेलवाल अमझेरा, कार्यालय व प्रचार मंत्री रवी माहेश्वरी, गोपाल खण्डेलवाल, महेन्द्र पंवार कचौरी वाले, संरक्षक मण्डल मे नरेश गंगवाल, रवी दोषी, बाकानेर, महेन्द्र सेठ कुक्षी, अनंत कुमार अग्रवाल धार, भगवान जी मुदंडा धामनोद, राजेश अग्रवाल बदनावर, राजेन्द्र मोदी धार, साथ ही 15 सदस्य की कार्यकारिणी की स्वीकृति बनाई गई है।कॉन्फेड्रेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) के जिला प्रवक्ता कवि नंदकिशोर उपाध्याय ने जानकारी दी।

पुलिस की अमानवीयता के खिलाफ कुनबी समाज ने खोला मोर्चा, दोषियों को फांसी देने की मांग

क्षत्रिय लोणारी कुंबी समाज संगठन ने सौंपा ज्ञापन

बैतूल। भोपाल में 23 वर्षीय युवक उदित गायकी की दो पुलिस कर्मियों द्वारा बेरहमी से पीट-पीटकर हत्या किए जाने से जिलेभर के कुनबी समाज में गहरा आक्रोश है। इसी मामले को लेकर क्षत्रिय लोणारी कुंबी समाज संगठन भैंसदेही द्वारा सोमवार को नगर के देशमुख काम्प्लेक्स में बड़ी संख्या में सामाजिक जन एकत्र हुए। दिवंगत उदित गायकी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद समाज के लोगों ने विरोध स्वरूप नारेबाजी की और रैली के रूप में तहसील कार्यालय पहुंचे। वहां समाजजनों ने राज्यपाल और मुख्यमंत्री के नाम भैंसदेही एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में समाज संगठन ने मांग की है कि इस जघन्य अपराध की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया जाए ताकि पूरी जांच निष्पक्ष तरीके से हो सके। दोषी दोनों पुलिस कर्मियों को फांसी की सजा दी जाए तथा उनके घरों पर बुलडोजर चलाया जाए। साथ ही भोपाल पिपलानी थाना प्रभारी सहित समूचे स्टाफ को बदलने की मांग की गई है ताकि जांच रिपोर्ट में किसी प्रकार की हेराफेरी न हो और सत्य न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। ज्ञापन में यह भी उल्लेख किया गया कि दिवंगत उदित गायकी अपने परिवार का एकमात्र सहारा थे, इसलिए शासन द्वारा उनके परिवार को उचित आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए। कुनबी समाज के विभिन्न संगठनों ने कहा कि यदि भविष्य में इस तरह की अमानवीय घटना दोबारा घटती है तो पूरा कुनबी समाज सडक़ों पर उतरकर उग्र आंदोलन करेगा, जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी। इस मौके पर कुनबी समाज संगठन के ब्लॉक अध्यक्ष वासुदेव धोटे, पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष ब्रह्मदेव कुबडे, मारोती बारस्कर, मनीष नावगे, देविदास खांडे, चंद्रभान बारस्कर, कृष्णा राव खासदेव सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

क्षत्रिय लोणारी कुनबी समाज संगठन ने सौंपा ज्ञापन

सारनी। भोपाल में पुलिसकर्मियों द्वारा छात्र उदित गायकी की निर्मम पिटाई से हुई मृत्यु ने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया है। यह मामला अब केवल राजधानी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि पूरे मध्यप्रदेश में पुलिस की बर्बरता के खिलाफ आक्रोश की लहर दौड़ पड़ी है। इसी क्रम में क्षत्रिय लोणारी कुनबी समाज संगठन सारनी ने सोमवार को अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) सारनी के माध्यम से मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा, जिसमें दोषी पुलिसकर्मियों पर सख्त कार्रवाई की माँग की गई है। ज्ञापन में कहा गया है कि राजधानी भोपाल में पुलिस के कुछ भ्रष्ट अधिकारियों ने 10,000 रुपये की रिश्वत न मिलने पर उदित गायकी जैसे होनहार इंजीनियर छात्र को इतनी बेरहमी से पीटा की। उसके पैंक्रियाज फट गए, जिससे उसकी दर्दनाक मौत हो गई। संगठन ने इसे मानवता पर कलंक बताते हुए कहा कि यह घटना केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरे समाज की सुरक्षा और अस्मिता पर प्रश्नचिह्न है। ज्ञापन में स्पष्ट कहा गया है कि जहाँ पुलिस को जनता की रक्षा करनी चाहिए, वहीं कुछ अधिकारी रक्षक से भक्षक बन बैठे हैं। यह केवल एक परिवार का दर्द नहीं, बल्कि हर नागरिक का अपमान है। संगठन ने मुख्यमंत्री से मांग की कि दोषी पुलिसकर्मियों को तत्काल सेवा से बर्खास्त किया जाए। धारा 302 (हत्या) के तहत कड़ी कानूनी कार्रवाई हो। मामले की निष्पक्ष जांच उच्च स्तरीय समिति से कराई जाए और मृतक उदित गायकी के परिजनों को उचित आर्थिक सहायता और न्याय प्रदान किया जाए। इस अवसर पर संगठन के अध्यक्ष विजय पड़लक, आरआर खाड़े, राजेश देशमुख सहित संगठन के पदाधिकारी मौजूद रहे।

पुलिस की बेरहमी का शिकार उदित के परिजन सीबीआई जांच पर अड़े

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत ने परिजनों से की मुलाकात, सीएम से मिलेंगे

बैतूल। कुनबी समाज के मेधावी और होनहार बेटे उदित गायकी की पुलिस पिटाई से असमय मौत से हडक़ंप मचा हुआ है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के राजनेता उदित के परिजनों से मिलकर उन्हें ढांएस बंधा रहे हैं। सोमवार को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और बैतूल विधायक, मुलताई विधायक के साथ मृत उदित के अंत्योदय नगर, बाग दिलकुश स्थित निज आवास पर पहुंचे थे। यहां पर परिजनों की चित्तकार और गमगीन माहौल ने उन्हें भी भावुक कर दिया। इस दौरान उदित के पिता बार-बार प्रदेश अध्यक्ष को कहते रहे कि उनके पुत्र की जिस बेरहमी से पीट कर हत्या हुई, इसकी सीबीआई जांच होना जरूरी है। इससे कम में वे कोई समझौता करने को तैयार नहीं है। उदित के पिता राजकुमार गायकी ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष खंडेलवाल से कहा कि यदि उनके पुत्र ने कोई गलती की थी तो पुलिसकर्मी 2-4 तमाचे मारकर उन्हें फोन कर देते तो वे खुद मौके पर पहुंच जाते, लेकिन लाठियों से जान निकलते तक मारना, कहां का इंसाफ है? उनकी बातों का प्रदेश अध्यक्ष ने समर्थन करते हुए कहा कि इस तरह की पिटाई करना कायराना और दुभाग्यपूर्ण है। उदित के पिता ने प्रदेश अध्यक्ष को उनके पुत्र की पुलिसकर्मी द्वारा की जा रही पिटाई का वीडियो दिखाया। उन्होंने बताया कि पुलिस ने थाना घेरने के बाद एफआईआर की, लेकिन यह भी आधी अधूरी है। पुलिस अधिकारी आरोपी पुलिसकर्मियों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। इस दौरान उदित की माता संगीता गायकी फफक-फफक रोने लगी। इससे पूरा माहौल गमगीन हो गया। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने उन्हें ढांढस बंधाया।

परिजनों से काफी देर तक मुलाकात के बाद उनकी सीबीआई जांच की मांग को लेकर हेमंत ने उन्हें आश्वासन दिया है कि शीघ्र ही इस बारे में वे मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव से मुलाकात करेंगे। उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया जाएगा। इसके बाद मीडिया से चर्चा करते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि यह घटना काफी दुर्भाग्य पूर्ण है। दोषियों पर निष्पक्ष कार्रवाई के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि परिजनों से उन्होंने काफी देर तक चर्चा की है। उन्हें न्याय दिलाने में सहयोग दिया जाएगा। इस दौरान उनके साथ मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, व बैतूल भाजपा जिला महामंत्री कृष्णा गायकी, आठनेर मंडल अध्यक्ष गोवर्धन राने समेत स्थानीय भाजपा पदाधिकारी मौजूद रहे।

आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में स्वास्थ्य शिविर आज

17 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

बैतूल। संचालनालय आयुष विभाग मध्य प्रदेश शासन भोपाल के आदेशानुसार, कलेक्टर बैतूल के मार्गदर्शन में एवं जिला आयुष अधिकारी डॉ.योगेश चौकीकर के निर्देशानुसार प्रत्येक माह के अनुसार इस माह भी निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जा रहा है।यह शिविर माह की प्रत्येक 14 तारीख को जिले के समस्त 17 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आयोजित किया जाता है ।शिविर का प्रारंभ आज शुभ 9 बजे से होगा। इस बार शिविर का विषय मौसमी बीमारियां है। शीतकाल बदलते मौसम में होने वाली बीमारी जैसे एलर्जी, ज्वर, श्वास, कास बीमारियों के बारे में जानकारी दी जाएगी एवं संबंधित रोगों की चिकित्सा की जाएगी। योग शिक्षक द्वारा आवश्यक योग का प्रशिक्षण दिया जाएगा एवं योगाभ्यास करवाया जाएगा। आयुष विभाग ने समस्त सामान्य जन से निवेदन किया है कि वे अपने निकटतम आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में आकर निःशुल्क औषधियों का लाभ प्राप्त करें एवं योग करके अपने स्वास्थ्य लाभ में निरंतरता बनाए रखें।

अल्पविराम सामाजिक बदलाव की ओर एक कदम : मनीष सोलंकी

भैंसदेही में आयोजित अल्पविराम कार्यशाला ने सिखाया आनंद का अर्थ

बैतूल। जनपद पंचायत भैंसदेही के सभागृह में 13 अक्टूबर को राज्य आनंद संस्थान एवं जन अभियान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय अल्पविराम परिचय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई। कार्यशाला की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई, जिसमें नगर पालिका परिषद भैंसदेही के अध्यक्ष मनीष सोलंकी, समाजसेवी दिलीप घोरे, राज्य आनंद संस्थान के जिला संपर्क व्यक्ति महेश गुंजेले, मास्टर ट्रेनर नारायण फरकले, तुलिका पचौरी, दिलीप गीद तथा जन अभियान परिषद के ब्लॉक समन्वयक विकास कुमरे की उपस्थिति रही। कार्यशाला को संबोधित करते हुए नगर पालिका परिषद अध्यक्ष मनीष सोलंकी ने कहा कि राज्य आनंद संस्थान की पहल पर आयोजित यह एक दिवसीय अल्पविराम कार्यशाला शासकीय कर्मचारियों के लिए सामाजिक बदलाव की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। राज्य आनंद संस्थान के जिला संपर्क व्यक्ति महेश गुंजेले ने आनंद की ओर विषय पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों से संवाद किया और आनंद संस्थान की विभिन्न गतिविधियों से परिचय

कराया। मास्टर ट्रेनर नारायण फरकले ने जीवन का लेखा-जोखा विषय पर सत्र लेते हुए प्रतिभागियों से आत्मचिंतन करवाया। उन्होंने यह प्रश्न रखे बचपन से अब तक मेरी मदद किसने की, मैंने किसकी निस्वार्थ मदद की, किसने मुझे दुख दिया और मैंने किसे दुख दिया, इन प्रश्नों के माध्यम से आत्मविश्लेषण और आत्मसाक्षात्कार का सत्र जीवंत रहा।

कार्यशाला में शामिल हुए 55 अधिकारी एवं कर्मचारी ....

कार्यशाला में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, कृषि विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, आयुष विभाग, पशुपालन विभाग, नगर पालिका परिषद तथा अन्य विभागों के कुल 55 अधिकारी एवं कर्मचारी शामिल हुए। सभी प्रतिभागियों को जन अभियान परिषद भैंसदेही द्वारा आनंद भोज कराया गया। प्रतिभागियों ने फीडबैक में कहा कि आनंद संस्थान की यह पहल उत्कृष्ट और प्रभावशाली है। इससे आत्मविश्लेषण, सकारात्मक दृष्टिकोण और सामाजिक सौहार्द की भावना मजबूत होती है। सभी ने आनंद विभाग से जुडक़र स्वयं से मुलाकात, आत्मस्वर सुनने और दूसरों की सहायता करने का संकल्प लिया। कार्यशाला के सफल आयोजन में जन अभियान परिषद भैंसदेही की टीम सोहन सिंह काकोडिया, शिवचरण बामने, रघुनाथ हरसुले सहित जनपद पंचायत भैंसदेही के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का विशेष सहयोग रहा।

मुख्य मार्ग पर चाकू से गोदकर युवती की हत्या करने वाले आरोपी को उम्रकैद

युवती का गला रेत कर किए थे 26 वार

बैतूल/मुलताई। मुलताई के गांधी चौक से नाका नंबर एक मुख्य मार्ग पर सरेआम 26 वर्षीय युवती सिमरन की गला काटकर और चाकुओं से गोदकर की गई हत्या के आरोपी सानिफ मलिक को द्वितीय अपर सत्र न्यायाधीश ने उम्रकैद एवं 10 हजार रुपए का जुर्माने की सजा सुनाई है। मुख्य मार्ग पर सरेआम चाकू से गोद कर की गई हत्या की घटना ने संपूर्ण जिले में सनसनी फैला दी थी। बता दे कि इस सनसनीखेज मामले को कोर्ट ने चिह्नित केस के रूप में रखा था। कोर्ट ने इस हत्याकांड में तकनीकी और इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य को आधार बनाते हुए आरोपी सानिफ

को हत्या का दोषी करार दिया और उम्रकैद की सज़ा सुनाई। इस फैसले का उल्लेखनीय पहलु यह है कि इस जघन्य हत्याकांड का मुख्य गवाह आईविटनेस मृतका का भाई पिंटू शहजाद था, जो कि कोर्ट में मुकर गया था, पक्षद्रोही हो गया था, किंतु उसके बावजूद न्यायालय ने फिजिकल एविडेंस, इलेक्ट्रॉनिक एविडेंस और डीएनए रिपोर्ट के आधार पर धारा 302 आईपीसी में उम्रकैद एवं 10 हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई है।

3 मई 2023 को हुई थी जघन्य घटना

गांधी चौक से नाका नंबर एक जाने वाले मुख्य मार्ग पर 3 मई 2023 की रात करीब 9.30 बजे आरोपी सानिफ ने सिमरन पिता अफजल नामक युवती पर चाकू से ताबड़तोड़ 26 बार वार किए थे और सरेराह उसका गला काटकर निर्मम हत्या कर दी थी यह घटना आरोपी की अंडे की दुकान के सामने हुई थी। पूछताछ में अंडे बेचने वाले आरोपी सानिफ ने खुलासा किया था कि मृतका सिमरन ने उसके कुछ वीडियो और ऑडियो बना लिए थे। सानिफ का रिश्ता महाराष्ट्र में तय हुआ था और उसकी सगाई भी हो चुकी थी, जबकि दो महीने बाद निकाह होना था। आरोपी ने बताया कि युवती उसका निकाह रोकने का प्रयास कर रही थी। इसी के चलते उसने यह कदम उठाया।

उपाध्याय श्री विभंजन सागर जी मुनिराज के सानिध्य में बुद्धिजीवी सम्मान समारोह में सम्मानित हुए समाजजन

धार। दिगंबर जैन समाज धार में परम पूज्य गुरुदेव श्री विभंजन सागर जी मुनिराज के पावन सानिध्य में बुद्धिजीवी सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ में मंगलाचरण प्रगति दीदी द्वारा प्रस्तुत किया गया ।

अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन गुरु पाद प्रक्षालन शास्त्र भेट किए गए। स्वागत भाषण समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल ने दिया। कार्यक्रम में समाज के डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, बैंकर्स उद्योगपति, चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं अध्यापक वर्ग जो कि धार व अन्य शहरों में अपनी उत्कृष्ट सेवाएँ दे कर समाज ही नहीं अपने शहर देश का नाम रोशन कर रहे हैं एवं समाज के कई प्रतिभाशाली बच्चे विदेश में रहकर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं उनके

उत्कृष्ट सेवा कार्य के लिए समाज द्वारा सम्मानित किया गया ।

इस अवसर पर पूज्य मुनिश्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज में सभी वर्गों के बुद्धिजीवियों को आपस में समन्वय स्थापित कर कार्य करना चाहिए, जिससे समाज का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। सभी को अपना अपना कार्य पूर्ण ईमानदारी से करना चाहिए यही हमारा सबसे बड़ा धर्म हैं। जब किसी समाज का बुद्धिजीवी सम्मानित होता है, तो वास्तव में सम्मान उस समाज की संस्कारशीलता, चिंतनशीलता और जीवंतता का होता है। अपने ज्ञान, कर्म और विचारों से न केवल स्वयं को प्रतिष्ठित किया है, बल्कि पूरी समाज को गौरवान्वित किया है। सच्चा बुद्धिजीवी वही होता है जो अपने ज्ञान को विनम्रता से बाँटे, समाज में जागृति जगाए और सत्य की राह दिखाए। जैन दर्शन कहता है – 'सम्यक ज्ञान बिना मोक्ष नहीं।'आज हम जिस व्यक्तित्व का सम्मान कर रहे हैं, उन्होंने इस सम्यक ज्ञान को व्यवहार में उतारकर समाज में दिशा दी। कार्यक्रम का संचालन सचिव संजय छाबड़ा ने किया । जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल द्वारा दी गई।

शाहपुर में ब्लॉक स्तरीय सॉफ्ट बॉल प्रतियोगिता के लिए अंडर-17 और अंडर-19 के हुए ट्रायल

खिलाड़ियों को प्रशिक्षकों ने प्रतियोगिताओं के लिए किया प्रेरित

बैतूल। बालक क्रीड़ा परिसर शाहपुर में 13 अक्टूबर को सॉफ्ट बॉल की ब्लॉक स्तरीय सिलेक्शन ट्रायल आयोजित किए गए। जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त विवेक पांडे के निर्देशानुसार यह ट्रायल अंडर-17 और अंडर-19 वर्ग के खिलाड़ियों के लिए संपन्न किया गया। इस अवसर पर खिलाड़ियों में खासा उत्साह देखने को मिला। खेल प्रशिक्षक हरनाम सिंह, चेतन सिरके, नवीन कनाठे, अजय भलावी और धर्मराज गलफट ने खिलाड़ियों को सॉफ्ट बॉल के तकनीकी पहलुओं और खेल कौशल पर विशेष टिप्स दिए।

उन्होंने खिलाड़ियों को आगे होने वाली जिला और क्षेत्रीय प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया और शुभकामनाएं दीं। ब्लॉक क्रीड़ा अधिकारी जीआर बरडे और ब्लॉक क्रीड़ा प्रभारी अनिल सिंह चौहान के मार्गदर्शन में प्रतियोगिता का संचालन सफलतापूर्वक किया गया। इस आयोजन में शाहपुर क्षेत्र के अनेक विद्यालयों से आए छात्र खिलाड़ियों ने भाग लिया और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। आयोजन के संयोजक प्राचार्य श्रीमती चौरसिया के मार्गदर्शन में जिला एवं मध्य क्षेत्रीय प्रतियोगिता की रूपरेखा भी तय की गई।

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर गंज बासौदा में हुआ भव्य आयोजन, 400 से अधिक बालिकाओं की सहभागिता

विदिशा (निप्र)। अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा गंज बासौदा के मानस भवन परिसर में एक भव्य एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, विभागीय अधिकारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं तथा बड़ी संख्या में बालिकाओं की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही। यह आयोजन बालिकाओं में आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और आत्मनिर्भरता की भावना को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया था। कार्यक्रम में लगभग 400 से अधिक बालिकाओं ने सहभागिता कर अपनी प्रतिभा और जागरूकता का परिचय दिया। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक श्री हरि सिंह रघुवंशी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे तथा नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती शशि यादव , जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती नीतू देवेंद्र रघुवंशी, एवं एसडीओपी श्रीमती शिखा भलावी, बाल कल्याण समिति की सदस्य श्रीमती लक्ष्मी शर्मा, विकासखंड शिक्षा अधिकारी श्री परता अहिरवार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से सीडीपीओ श्री ब्रिजेन्द्र प्रताप सिंह, सीडीपीओ श्री पारितोष सोनकर, जिला समन्वयक श्री अरविंद मिश्र, संरक्षण अधिकारी श्री संतोष रघुवंशी तथा श्री रविंद्र रघुवंशी एवं पर्यवेक्षक उपस्थित की गरिमामयी उपस्थिति रही। इन सभी अधिकारियों और अतिथियों ने बालिकाओं से संवाद किया, उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया और सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न बालिकाओं से संबंधित योजनाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती पूजन एवं कन्या पूजन के साथ किया गया। बालिकाओं ने स्वागत गीत एवं सरस्वती वंदना प्रस्तुत कर पूरे वातावरण को प्रेरणादायक बना दिया। तत्पश्चात अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया।मुख्य अतिथि विधायक श्री हरि सिंह रघुवंशी ने कहा कि आज की बालिकाएं कल का भविष्य हैं। उन्हें केवल शिक्षा ही नहीं, बल्कि आत्मरक्षा और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी आगे बढ़ना चाहिए। समाज में बेटी केवल जिम्मेदारी नहीं , बल्कि एक सम्मान है। हमें हर बेटी को अवसर और सुरक्षा दोनों देने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु ÷बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ एवं लाड़ली लक्ष्मी योजना जैसी योजनाएं चल रही हैं, जिनका लाभ प्रत्येक पात्र बालिका को मिलना चाहिए। सीडीपीओ श्री ब्रिजेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि बालिकाओं का सशक्तिकरण केवल भाषण का विषय नहीं, बल्कि एक सतत प्रयास है। आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से बालिकाओं को शिक्षा, पोषण और सुरक्षा की दिशा में जागरूक किया जा रहा है। सीडीपीओ श्री पारितोष सोनकर ने बताया कि विभाग द्वारा समय-समय पर किशोरी बालिकाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर, प्रतियोगिताएं और जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं ताकि वे आत्मविश्वासी बन सकें। जिला समन्वयक श्री अरविंद मिश्र ने कहा कि बालिकाओं में आत्मरक्षा और आत्मविश्वास की भावना विकसित करना आज की जरूरत है। समाज को यह समझना होगा कि बालिका केवल घर की नहीं, देश की शान है। एसडीओपी श्रीमती शिक्षा भलावी जी ने बालिकाओं को कानूनी अधिकारों की जानकारी के साथ सोशल मीडिया का प्रयोग सावधानी से हो इसपर विशेष जोर दिया। संरक्षण अधिकारी श्री संतोष रघुवंशी ने बाल अधिकारों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किसी भी प्रकार के शोषण, बाल विवाह या हिंसा की स्थिति में कानून के तहत कठोर कार्रवाई का प्रावधान है। उन्होंने बालिकाओं से आग्रह किया कि किसी भी अन्याय की स्थिति में चाइल्डलाइन 1098 जैसी सेवाओं का उपयोग करें। भव्र सांस्कृतिक प्रस्तुतियां , क्विज प्रतियोगिता, जूडो-कराटे प्रदर्शन एवं सेल्फ डिफेंस प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए। विशेष रूप से आयोजित क्विज प्रतियोगिता में बालिकाओं ने बाल अधिकार, शिक्षा, महिला सुरक्षा कानूनों, एवं महिला सशक्तिकरण योजनाओं से संबंधित प्रश्नों का उत्साहपूर्वक उत्तर दिया।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की शपथ

बालिकाओं ने बेटी के सम्मान और शिक्षा पर बेटी है अनमोल कविता का पाठ किया एवं बाल विवाह रोकने हेतु सपाट लिया। कार्यक्रम के अंत में विधायक श्री हरि सिंह रघुवंशी के द्वारा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम के समापन पर जिला समन्वयक श्री अरविंद मिश्र ने उपस्थित सभी अतिथियों, जनप्रतिनिधियों, विभागीय अधिकारियों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं बालिकाओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि महिला एवं बाल विकास विभाग निरंतर ऐसी गतिविधियों के माध्यम से बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

बासौदा के सीएम राइज स्कूल में बच्चों ने सीखे आपदा के समय बचाव के गुर

विदिशा (निप्र)। सीएम राइज स्कूल, गंजबासौदा में टीआई गंजबासौदा के नेतृत्व में एसडीईआरएफएवं होमगार्ड के जवानों द्वारा आपदा जागरूकता पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला शनिवार 11 अक्टूबर को आयोजित की गई थी। जिला होमगार्ड कमांडेंट श्री मंयक जैन ने बताया कि कार्यक्रम में लगभग 200 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और भूकंप, आग, बाढ़, सड़क दुर्घटना, बिजली गिरने जैसी विभिन्न आपदाओं से निपटने के उपायों की जानकारी प्राप्त की। कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रदर्शन के माध्यम से आपदा के समय अपनाए जाने वाले बचाव उपाय सिखाए गए उनमें आग लगने पर सुरक्षित निकासी की प्रक्रिया,भूकंप के दौरान ड्रॉप, कवर एंड होल्ड तकनीक,बाढ़ के समय सुरक्षित स्थान पर पहुंचने एवं राहत दल से संपर्क बनाए रखना तथा डूबने वाले व्यक्ति को बचाने की सावधानियां,विद्युत करंट लगने पर प्राथमिक उपचार तथा सीपीआर का लाइव प्रदर्शन शामिल रहा। डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट श्री जैन ने बताया कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य बच्चों में आपदाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाना, आत्मरक्षा के प्रति आत्मविश्वास विकसित करना और संकट की स्थिति में सही निर्णय लेने की क्षमता का निर्माण करना रहा। विद्यालय स्टाफ ने भी इस पहल की सराहना करते हुए इसे अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण बताया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय के प्राचार्य ने होमगार्ड एवं एसडीईआरएफ टीम का आभार व्यक्त किया है।

संक्षिप्त समाचार

चलित खाद्य प्रयोगशाला द्वारा हरदा के प्रतिष्ठानों के खाद्य सामग्रियों की जांच की

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देश पर त्यौहारों को ध्यान में रखते हुए चलित खाद्य प्रयोगशाला द्वारा हरदा के प्रतिष्ठानों का निरीक्षण कर खाद्य सामग्रियों के सैम्पल की जांच की गई। खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री राजेन्द्र कांबले ने बताया कि निरीक्षण के दौरान हरदा के घंटाघर क्षेत्र में शंकरलाल दामोदर किराना से गुड़ व तुअर दाल, श्रीराम रामदास ट्रेडर्स से लोंग, काली मिर्च व चाय पत्ती, पवन कुमार अग्रवाल ट्रेडर्स से हल्दी, विजय सिंह नारायण सिंह स्वीट्स से पेड़ा, मावा बर्फी, मोदक व चॉकलेट बर्फी, पुरोहित स्वीट्स से मलाई बर्फी, ड्रायफूड केक, अंजीर केक, काजू कतली, क्रीम रोल, खजूर रोल एवं और भी अन्य खाद्य सामग्री तथा मिठाईयों के सैंपल लिए गए तथा उनको चलित खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला में चेक किया गया। इसी प्रकार पुरोहित स्वीट्स से मलाई बर्फी, बालूशाही व सेव नमकीन, गोयल ट्रेडर्स से मावा तथा विजय सिंह ठाकुर स्वीट्स से बेसन के लड्डू का सैंपल लिये गये। उन्होने बताया कि ये सैंपल खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे जायेंगे तथा जांच बाद रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही की जाएगी। कार्यवाही के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी राजेंद्र कांबले केमिस्ट हेमंत कीर सहित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

एसडीएम एवं तहसीलदार ने किया खाद-बीज विक्रय केंद्रों का निरीक्षण

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जिले में खाद बीज के सुचारू वितरण सुनिश्चित करने और कालाबाजारी को रोकने के उद्देश्य से सभी विकासखंडों में कृषि विभाग एवं राजस्व विभाग के अधिकारियों द्वारा खाद-बीज विक्रय केंद्रों एवं गोदामों का निरीक्षण किया जा रहा है। इसी क्रम में इछावर एसडीएम श्री जमील खान द्वारा इछावर क्षेत्र के तथा तहसीलदार डॉ अमित सिंह द्वारा सीहोर क्षेत्र के अनेक खाद-बीज विक्रय केंद्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ने उपलब्ध स्टॉक, वितरण पंजी, बिक्री मूल्य एवं किसानों को दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली। उन्होंने विक्रेताओं को निर्देश दिए कि किसानों को समय पर एवं निर्धारित दर पर गुणवत्तापूर्ण खाद-बीज उपलब्ध कराया जाए। इसके साथ ही खाद वितरण प्रक्रिया को सुगम बनाया जाए। ताकि किसानों को परेशान न होना पड़े। इसी प्रकार अन्य अधिकारियों द्वारा भी जिले के अनेक उर्वरक विक्रय केंद्रों का औचक निरीक्षण किया गया।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर पीएम एक्सीलेंस कॉलेज में कार्यक्रम आयोजित

सीहोर (निप्र)। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर पीएम कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस सीहोर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ रोहिताश्व शर्मा ने विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में जानकारी दी। इसके साथ ही मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित बीमारियों से बचने के तरीके बताए। उन्होंने कहा कि तनाव हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, इसलिए इससे बचना चाहिए। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को योगा एवं ध्यान की गतिविधियां भी कराई गईं।

जानकारी उपलब्ध कराने के निर्देश

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता ने जिले में आदि कर्मयोगी अभियान के अंतर्गत डिस्ट्रिक्ट एक्शन प्लान बनाए जाने हेतु संबंधित विभागो को निर्धारित प्रपत्र में जानकारियां उपलब्ध कराने के निर्देश दिए है। आदिम जाति कल्याण विभाग के जिला संयोजक श्री सुनील मरकाम ने बताया कि जिले का एक्शन प्लान की एकजाई जानकारी वरिष्ठ कार्यालयों को प्रेषित की जानी है ताकि संबंधित विभागो के द्वारा क्या-क्या कार्य संपादित किए जाएंगे से भलीभांति अवगत होकर उनके क्रियान्वयन की रूपरेखा पर निगरानी रखी जा सकें।

रेत, गिट्टी, डस्ट के अवैध परिवहन में संलिप्त 1 डम्पर और 4 ट्रेक्टर-ट्राली जप्त

बैतूल (निप्र)। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार जिले में अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। खनिज विभाग बैतूल द्वारा खनि अमले के साथ जिले के शाहपुर, घोड़ाडोंगरी, आमला क्षेत्र में खनिजों के अवैध परिवहन, उत्खनन, भंडारण की रोकथाम के लिए आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान 11 अक्टूबर 2025 को घोड़ाडोंगरी क्षेत्रान्तर्गत 01 डम्पर क्रमांक एमएच 40 सीटी 3976 को गिट्टी, डस्ट के अवैध परिवहन करते पाए जाने पर जप्त कर पुलिस चौकी घोड़ाडोंगरी एवं 01 ट्रेक्टर कमांक एमपी 48 ए 7231 को पुलिस थाना सारणी की अभिरक्षा में खड़ा करवाया गया है। वहीं शाहपुर क्षेत्र में 02 ट्रेक्टर बिना नम्बर सोनालिका एवं फार्माट्रेक को खनिज रेत के अवैध परिवहन करते पाए जाने पर जप्त कर वाहन मालिक की सुपुर्दगी में दिया गया है। इसी प्रकार आमला क्षेत्रान्तर्गत 01 ट्रेक्टर क्रमांक एमपी 48 एए 7393 को खनिज रेत के अवैध परिवहन करते पाए जाने पर पुलिस थाना आमला की अभिरक्षा में खड़ा किया गया है। उक्त वाहनों के वाहन चालकों , वाहन मालिकों के विरूद्ध प्रकरण दर्ज कर मध्यप्रदेश अवैध खनन, परिवहन तथा भण्डारण नियम 2022 के प्रावधानों के तहत प्रकरण न्यायालय अपर कलेक्टर बैतूल में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। खनिज विभाग द्वारा अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भण्डारण पर सतत निगरानी रखते हुए प्रभावी कार्यवाही की जा रही है।

हरियाणा में आई प्राकृतिक आपदा से पीड़ित परिजनों को संत रामपालजी ने सहायता प्रदान की

हरियाणा । हरियाणा के जिला रोहतक-ग्राम महिम चौबीसी चबूतरे पर खाप पंचायत द्वारा ऐतिहासिक मानवता रक्षक सम्मान में -संत रामपाल जी महाराज आपदा पीड़ितों को संबल प्रदान कर सहायता प्रदान की। मुनिद्र धर्मार्थ ट्रस्ट के संचालक-,जगद्गुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जी ने प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़ पीड़ित जिले जैसे - हिसार, भिवानी,फतेहबाद ,जींद, रोहतक जिले के लगभग 200 गांव डूब क्षेत्र में आ गए। हजारों एकड़ खेती में पानी भर गया। जिससे फसलें बर्बाद होने की स्थिति में पहुंच चुकी थी ।घरों में पानी भर गया ,लोगों को खाने ,पीने के पानी की समस्या खड़ी हो गई। गांव के सभी लोगों ने सरकार से खेतों में भरे पानी को हटाने के लिए मदद मांगी। परंतु समस्या का कोई समाधान नहीं हुआ। सभी ग्रामवासियों ने सरपंचों से मिलकर संत रामपाल जी महाराज जी से प्रार्थना लगाई गई। संत रामपाल जी महाराज जी ने प्रार्थना स्वीकार करते ही ,अपने अनुयाइयों को खेतों में भरे पानी को निकालने के लिए तत्काल 10, 15, 20 हॉर्स पावर तक की मोटर एवं आठ इंची पाइप व जरुरी आवश्यक सामग्री भेज कर आदेश दिया आसपास के गांव -गांव में जाकर खेतों मैं भरे पानी को निकलवाने में मदद करें। अनुयायियों द्वारा गुरुजी के आदेश को मानते हुए प्राकृतिक आपदा से मुक्ति दिलाई। क्षेत्र के लोगों का कहना है संत रामपाल जी महाराज ने निस्वार्थ जन- कल्याणकारी कार्य किया ।इसी तरह संत रामपाल जी महाराज अन्नपूर्णा की मुहिम पूरे भारत में चला रहे हैं। संत रामपाल जी महाराज जी द्वारा लोगों को नशा मुक्त, दहेज मुक्त ,छुआछूत मुक्त भ्रष्टाचार मुक्त ,एवं सत भक्ति देकर भारत में स्वच्छ समाज का निर्माण करने में अहम् भूमिका निभा रहे हैं।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में उद्यमिता शिविर का आयोजन

विद्यार्थियों ने स्वदेशी अपनाओ, देश बचाओ थीम पर लगाए आकर्षक स्टॉल

बैतूल (निप्र)। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस जयवन्ती हॉक्सर शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैतूल में मध्यप्रदेश शासन के निर्देशानुसार उद्यमिता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिले के विभिन्न महाविद्यालयों शासकीय महाविद्यालय शाहपुर , शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही, ज्ञानोदय महाविद्यालय बैतूल एवं ज. हॉ. शास. स्ना. महाविद्यालय बैतूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिविर में विद्यार्थियों ने स्वदेशी अपनाओ, देश बचाओ के संदेश को केंद्र में रखते हुए अनेक स्वदेशी उत्पादों और नवाचारों के स्टॉल लगाए। छात्रों द्वारा तैयार किए गए हस्तनिर्मित उत्पादों ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. अनीता सोनी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं को अपने कौशल के माध्यम से आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब हम अपने कौशल से जीविकोपार्जन करते हैं, तो हम स्वयं अपने मालिक बन जाते हैं। वाणिज्य विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश शेषकर ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि कौशल विकास से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। उन्होंने विद्यार्थियों से अधिक से अधिक नवाचार करने और अपने प्रयोगों को पेटेंट करवाने का आह्वान किया। बांस कला प्रशिक्षक श्री ललित सोनी ने कहा कि कला हमें मानसिक संतुष्टि देती है और इसे व्यवसाय का रूप देकर जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई जा सकती है।

स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के संयोजक प्रो. ऋषिकांत पंथी ने छात्रों को मार्केटिंग के गुण सिखाए और उन्हें उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए शुभकामनाएं दीं।कार्यक्रम के सफल संचालन में प्रो. अर्चना सोनरे, प्रो. संतोष पवार, डॉ. महेंद्र नावंगे, प्रो. दीपिका साहू, श्री राजेंद्र वाघमारे, कुमारी गायत्री यादव, विभिन्न महाविद्यालयों के दल प्रभारी एवं विद्यार्थियों का सराहनीय योगदान रहा।

दीपावली से पहले शहर को संवारने के लिए विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने विभागों को दिए सख्त निर्देश

बैतूल (निप्र)। दीपावली से पहले नगर के सभी आवश्यक कार्यों को गति देने के उद्देश्य से विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने नगर पालिका के बाल मंदिर हॉल में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की। इस बैठक में नगर के विकास से जुड़े सभी विभागों के अधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कर्मचारी मौजूद रहे। विधायक हेमंत खंडेलवाल ने आगामी दीपावली पर्व को देखते हुए नगर की साफ-सफाई, विद्युत व्यवस्था, सड़क निर्माण और नागरिक सुविधाओं से संबंधित कार्यों की विस्तार से समीक्षा की और अधिकारियों को समयसीमा में कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। बैठक में राजस्व विभाग से एसडीएम, तहसीलदार, एमपीईबी के अधिकारी, लोक निर्माण विभाग की कार्यपालन यंत्री, नगरपालिका के अधिकारी गण एवं नगर पालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर, उपाध्यक्ष महेश राठौर, सभापति गण तथा नगर पालिका के पार्षदगण उपस्थित रहे।

विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने सबसे पहले पट्टों के संबंध में चर्चा करते हुए कहा कि नगर में जिन लोगों के पट्टों की समस्या लंबित है, उनका शीघ्र निराकरण किया जाए। उन्होंने राजस्व विभाग को निर्देश दिए कि जमीन की उपलब्धता के अनुसार सर्वे कार्य शीघ्र पूरा किया जाए और पट्टों को व्यवस्थित रूप से जारी किया जाए ताकि नागरिकों को राहत मिल सके। जर्जर विद्युत पोल हटाए जाएंगे

अंतरराष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य दिवस

किशोरी बालिकाओं के लिए एक दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन एवं महिला एवं बाल विकास विभाग की जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती विनीता लोढ़ा के मार्गदर्शन में अंतरराष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आज विदिशा जिले के शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय में किशोरी बालिकाओं के लिए मानसिक स्वास्थ्य एवं सकारात्मक जीवन दृष्टिकोण विषय पर एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य बालिकाओं में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना, तनाव प्रबंधन के उपाय बताना तथा उनके आत्मविश्वास को सशक्त बनाना था। शिविर में विद्यालय की लगभग 200 से अधिक बालिकाओं ने सहभागिता की। विभिन्न इंटरैक्टिव सत्रों के माध्यम से बालिकाओं ने अपने अनुभव साझा किए और विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला चिकित्सालय विदिशा के वरिष्ठ मनोचिकित्सक डॉ. अशोक राजपूत शामिल हुए। उन्होंने बताया कि मानसिक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने किशोरावस्था के दौरान आने वाले मानसिक परिवर्तनों, तनाव, अवसाद, और आत्म-संयम के महत्व पर विस्तृत रूप से चर्चा की। डॉ. राजपूत ने बालिकाओं को सरल जीवनशैली अपनाने, नियमित व्यायाम, ध्यान और संवाद बनाए रखने के लिए प्रेरित किया।

महिला एवं बाल विकास विभाग से वन स्टॉप सेंटर की प्रशासक श्रीमती कृतिका व्यास ने विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी दी, जो महिलाओं और किशोरियों के मानसिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में सहायक हैं। उन्होंने बताया कि वन स्टॉप सेंटर में न केवल संकट ग्रस्त महिलाओं को सहायता दी जाती है, बल्कि मानसिक परामर्श, कानूनी सहायता और मनोवैज्ञानिक सहयोग भी निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रतिनिधि श्री अरविंद मिश्रा ने कहा कि बालिकाओं का आत्मविश्वास और मानसिक दृढ़ता ही उनके उज्जवल भविष्य की नींव है। उन्होंने किशोरियों से खुले संवाद के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि किसी भी मानसिक समस्या को छिपाने के बजाय सांझा करना ही समाधान की दिशा में पहला कदम है। बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री रामबाबू प्रजापति एवं श्री चंद्रभान सिंह बघेल ने बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि मानसिक स्वास्थ्य का सीधा संबंध समाज की प्रगति से है। उन्होंने बालिकाओं को सकारात्मक सोच, लक्ष्य निर्धारण और आत्म-सुरक्षा के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। समिति के अन्य सदस्यगणों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए और सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया गया।

पीएम धन धान्य कृषि योजना और दलहन आत्म निर्भरता मिशन का शुभांरभ

विदिशा (निप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने शनिवार को पीएम धन धान्य कृषि योजना और दलहन आत्म निर्भरता मिशन का शुभांरभ किया है। कृषि अवसंरचना कोष, पशुपालन, मत्स्यपालन और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की 1100 से अधिक परियोजनाओं व 42000 करोड़ रूपए से अधिक की कृषि परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया है ।प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के उपरोक्त कार्यक्रम का विदिशा जिले में भी सीधा देखने सुनने के प्रबंध सुनिश्चित किए गए थे। विदिशा कृषि उपज मंडी प्रागंण में आयोजित कार्यक्रम में विदिशा विधायक श्री मुकेश टण्डन, अनाज तिलहन व्यापार संघ के अध्यक्ष श्री राधेश्याम महेश्वरी सहित अन्य गणमान्य नागरिकों के साथ-साथ किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के उप संचालक श्री केएस खपेडिया, सहायक संचालक श्री महेन्द्र ठाकुर, मंडी सचिव श्रीमती नीलकमल वैद्य सहित अन्य व्यापारीगण, हम्माल व तुलावटगणो के साथ-साथ कृषकबंधु समेत मंडी के अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

महिला पत्रकार, तालिबानी सोच और दोस्ती की मजबूरियां!

राइट क्लिक
अजय बोकिल
लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।

कुछ लोगों को यह बात 'छोटी-सी' लग सकती है, लेकिन इसमें बड़े संकेत छुपे हुए हैं। जो हुआ, उस पर अगर मीडिया जगत और विपक्ष ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त न की होती तो शायद इस घटना को भी तालिबान से मजबूरन की जा रही दोस्ती के कालीन के नीचे सरका दिया जाता। बेशक, दक्षिण एशिया में अफगानिस्तान की भू राजनीतिक परिस्थिति, उससे हमारे ऐतिहासिक रिश्तों, बदलते वैश्विक समीकरण चलते और भारत के व्यापक अंतरराष्ट्रीय हितों के मद्देनजर तालिबान से कूटनीतिक दोस्ती सही मानी जा सकती है, लेकिन यह दोस्ती उन तालिबानी मूल्यों से कतई नहीं हो सकती, जो मध्ययुगीन और महिलाओं के प्रति दुराग्रह और प्रतिगामी सोच से भरे हैं। जबकि हमारे भारतीय मूल्य लिंग, धर्म अथवा जाति भेद से परे समानता, समता और सभी को न्याय की संवैधानिक गारंटी पर आधारित हैं। भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर से मुलाकात के बाद अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी ने अपने देश के दिल्ली स्थित दूतावास में जो पहली पत्रकार वार्ता की, उसमें भारतीय महिला पत्रकारों को नहीं बुलाया गया। इस पर बवाल मचना ही था, क्योंकि इसे काबुल सरकार की वर्तमान सोच की संदर्भ में इस घटना को देखा गया। महिला पत्रकारों और और 'एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया' ने अफगान दूतावास द्वारा इस लैंगिक भेदभाव की कड़ी आलोचना की। इसके बाद भारत सरकार ने मामले से यह कहकर पल्ला झाड़ा कि उसका इसमें कोई रोल नहीं है। अफगान दूतावास के अंदर क्या होता है, वह वही जानें। जबकि अफगान दूतावास (जो कल तक खुद तालिबान सरकार के खिलाफ था) ने सफाई दी कि भारतीय महिला पत्रकारों को प्रेस कांफ्रेंस से अलग रखने का उसका कोई सुचिंतित इरादा नहीं था। यह पत्रकारवार्ता जल्दबाजी में कुछ पत्रकारों को बुलाकर आयोजित की गई थी। भारत में व्यापक प्रतिक्रिया के बाद रविवार को अफगान दूतावास में दूसरी पत्र कारवार्ता में न केवल महिला पत्रकारों को बुलाया गया, बल्कि उन्हें आगे बिठाया गया। यह संदेश देने की कोशिश थी कि महिला पत्रकारों के मुद्दे पर न तो अफगानिस्तान भारत से और न भारत अफगानिस्तान से रिश्ते बिगाड़ना चाहता है। लेकिन इसका अर्थ नहीं है कि महिलाओं को लेकर तालिबानी सोच में रत्तीभर भी फर्क आया हो।

वैसे यह सवाल राजनीतिक, कूटनीतिक और मीडिया जगत में भी तैर रहा है कि मोदी सरकार कट्टरपंथी तालिबान को इस तरह गले क्यों लगा रही है? क्या यह स्वागत-सत्कार केवल संकट कालीन मजबूरी है, भू-राजनीतिक हालात का अपने ढंग लाभ उठाने की कोशिश है, पाक को कांटे से कांटा निकालने की शैली में सबक सिखाने की कूटनीतिक चाल है या फिर विवशताजनित दोस्ती है? यह सही है कि अमेरिका द्वारा चार साल पहले अफगानिस्तान (और उन तमाम आधुनिक सोच वाले अफगानियों को उनकी किस्मत के भरोसे छोड़कर) से जाने के बाद भारत सरकार ने तालिबानी शासन को मध्ययुगीन बर्बर सोच वाला करार देकर उससे दूरी बना ली थी। लेकिन यह भी कड़वा सच है कि तालिबान चार साल से अफगानिस्तान की सत्ता पर काबिज हैं। उन्होंने वहां कट्टर इस्लामिक शरिया कानून लागू कर रखे हैं, जिससे बहुत से अफगान भी सहमत नहीं है। लेकिन बेबस हैं। उधर अफगानिस्तान अभी भी मानता है कि भारत के साथ उसके ऐतिहासिक रिश्ते हैं। लेकिन इस्लामिक देश होते हुए भी पाकिस्तान पर अफगानों का कभी भरोसा नहीं रहा। उनकी तुलना में भारत ज्यादा विश्वसनीय है। हालांकि भारत ने अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को अभी मान्यता नहीं दी है, लेकिन धीरे-धीरे उसी दिशा में बढ़ रहा है। कारण साफ है कि भारत अफगानिस्तान में चीन, पाकिस्तान और रूस के लिए मैदान खुला नहीं छोड़ना चाहता। जो सही भी है, लेकिन तालिबान से दोस्ती हो, लेकिन तालिबानों मूल्यों से न हो। अफगान दूतावास की घटना तो केवल खतरे की घंटी भर है। अपनी पहली आधिकारिक यात्रा में विदेश मंत्री मुत्तकी ने भारत के सहयोग पर जोर दिया। यह सलाह भी दी कि भारत, पाक के साथ बाघा बॉर्डर को खोलें ताकि अफगानिस्तान से माल आसानी से भारत भेजा जा सके। यहां तक तो ठीक, लेकिन मुत्तकी दिल्ली के अलावा और कहीं गए तो वह था- दारूल उलूम देवबंद। यह इस्लामी के सुन्नी इस्लामी शिक्षा का दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा केन्द्र हैं, जहां करीब 4 हजार छात्र धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते हैं। जिनमें कुछ विदेशी छात्र भी हैं। दारूल उलूम 1 से 5 वर्ष तक के अलग अलग पाठ्यक्रम संचालित करता है, कुरान, हदीस, नबूवत, अरबी, उर्दू भाषा के अलावा साहित्य और विज्ञान भी शामिल है। शिक्षा का माध्यम उर्दू है। मुख्य जोर दीनी तालीम पर ही है। इस संस्था की स्थापना भारत में मुगल सत्ता के पूर्ण अवसान के बाद हजरत मौलाना मोहम्मद कासिम नानोतवी और हाजी मोहम्मद ने की थी। उसका उद्देश्य भारत में गौरवपूर्ण मुस्लिम शासन की परंपरा को सहेजे रखना और इस्लामिक विचार और जीवनशैली का संवर्द्धन करना था। संस्थाश का संचालन मजलिसे शूरा करती है और इसके प्रमुख मोहतमिम कहलाते हैं। वर्तमान में इसके प्रधानाचार्य मौलाना अर्शद मदनी हैं। 84 वर्षीय मदनी रूढ़िवादी जमीयत उलेमा-ए-हिंद के भी अध्यक्ष हैं।

यूं भारत में इस्लामिक शिक्षा देने वाले और भी केन्द्र हैं। लेकिन विदेश मंत्री मुत्तकी ने देवबंद का ही चयन क्यों किया? मुस्लिम देशों से आने वाले राष्ट्राध्यक्ष अथवा राजनयिक अमूमन धार्मिक शिक्षा संस्थानों में नहीं जाते। वो ज्यादातर राजनेताओं से या सामाजिक संगठनों से मिलते हैं। लेकिन मुत्तकी का दौरा देवबंद जाने के कारण ज्यादा चर्चित हुआ। हो सकता है, इस बहाने वो अपने देश में भी अपनी गहरी इस्लामिक आस्था और उसके सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता का संदेश देना चाहते हों। दारूल उलूम इस्लामिक शिक्षा का केन्द्र भले हो, लेकिन महिलाओं को लेकर उनकी सोच भी तकरीबन वही है, जो मुत्तकी की है। दारूल उलूम में केवल पुरूष विद्यार्थियों को प्रवेश मिलता है। महिलाओं को नहीं। इसको लेकर खुद मुस्लिम समाज में होने वाली आलोचना के चलते पिछले साल दारूल उलूम प्रबंधन ने महिलाओं को संस्थान में केवल भ्रमण की इजाजत दे दी है। लेकिन वह भी हिजाब और पर्दादारी के साथ। पढ़ने-पढ़ाने का तो सवाल ही नहीं है।

मुत्तकी को देखने और उन्हें छूने के लिए दारूल उलूम में छात्रों की जो भीड़ उमड़ी, उससे यह संदेश गया कि उनकी सोच भी तालिबान से मिलती है। यही चिंता का विषय है। मुत्तकी, संस्था प्रमुख मौलाना मदनी से मिले। बाद में मदनी ने इस मुलाकात के बारे में बयान दिया कि मुत्तकी ने भरोसा दिलाया है कि अफगानिस्तान आतंकियों को भारत के खिलाफ अपनी जमीन का इस्तेमाल नहीं करने देगा।

उधर भारत में कड़ी आलोचना के बाद अफगान विदेश मंत्री महिला पत्रकारों को लेकर अपनी सोच से थोड़ा समझौता किया, लेकिन खुद अफगानिस्तान में आज महिलाएं एक सदी पीछे चली गई हैं। वहां महिला पत्रकार खुलकर कह भी नहीं सकती कि वो पत्रकार हैं। अफगान नेशनल जर्नलिस्ट यूनियन द्वारा पूर्व में कराए गए एक सर्वे के अनुसार तालिबान शासन में 87 फीसदी महिलाओं के साथ लैंगिक भेदभाव हो रहा है। 60 फीसदी महिलाओं ने अपनी नौकरियां गंवा दी हैं।

इनमें से 91 फीसदी महिला पत्रकार ऐसी थीं, जो अपने परिवार में अकेली कमाने वाली थीं। तालिबान शासन द्वारा इतने भयंकर दमन के बावजूद बताया जाता है कि कुछ महिला पत्रकार साहस के साथ अभी भी किसी तरह अपना काम कर रही हैं। 2021 में जब अफगानिस्तान में तालिबान सत्ता में आए, उस वक्त देश में 1400 महिला पत्रकार काम कर रही थीं। 2023 में इनकी संख्या 400 रह गई। हालांकि बताया जाता है कि 2024 में इनकी संख्या बढ़कर 600 हो गई है। लेकिन काम करने की परिस्थितियां बेहद कठिन और चुनौतीपूर्ण हैं। उन पर बहुत सारे प्रतिबंध हैं। अफगानिस्तान की एक जानी-मानी पत्रकार और 'रूखशाना' की संपादक जहरा जोया के मुताबिक वे इसलिए काम रही हैं, क्योंकि पत्रकारिता उनके लिए मिशन हैं और वो अफगानिस्तान में महिलाओं की दुर्दशा को दुनिया के सामने ला रही हैं। जहरा आजकल लंदन में रहती हैं।

पत्रकारिता तो दूर महिलाओं के अन्य क्षेत्रों में काम करने लेकर भी तालिबान की सोच नकारात्मक है। तीन साल पहले पाकिस्तान की तत्कालीन विदेश मंत्री हिना रब्बानी खार जब बिना हिजाब के अफगानिस्तान के तालिबान शासको से काबुल जाकर मिलीं तो कट्टरपंथियों ने काफी हल्ला मचाया था। लेकिन हिना ने इसकी परवाह नहीं और अफगान शासकों से वैसे ही हाथ मिलाया और बातचीत की।

तालिबान सरकार ने अपने देश में सभी महिलाओं को बुर्के में रहना अनिवार्य कर छठी से आगे पढ़ने पर रोक लगा दी है। तालिबान की नजर में महिलाओं का काम सिर्फ बच्चे पैदा करना और दीनी इबादत करने में जिंदगी गुजारना है। यहां तक कि सजने संवरने, गाने-बजाने तक को इस्लाम विरोधी करार दे दिया गया है। यह सब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 'बेटी पढ़ाओं, बेटी बचाओ' सोच के ठीक विपरीत है। हालत यह है कि कुछ साल पहले तक जिस अफगानिस्तान की महिला क्रिकेट टीम टूर्नामेंटों में उतरती थी, वो आज ऑस्ट्रेलिया में शरण लिए हुए है और जिसे महिला वन डे वर्ल्ड कप में विशेष दर्शक के रूप में आमंत्रित किया गया है। प्रसिद्ध लेखिका तस्लीमा नसरीन के अनुसार तालिबान के लिए महिलाएं इंसान ही नहीं हैं। वैश्विक हालात और दक्षिण एशिया के राजनीतिक गणित के चलते भारत सरकार तालिबानियों से रिश्ते रखे, लेकिन उन प्रतिगामी मूल्यों को कतई बर्दाश्त न करे, जो हमारे मूल्यों के खिलाफ हो। भारत में इसकी कोई जगह नहीं है।

महंगाई राहत देने केंद्र सरकार से गुहार, गृह मंत्रालय को लिखा पत्र

भोपाल। पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना ने केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय को पत्र लिखकर अवगत कराया है कि मध्यप्रदेश राज्य पुनर्गठन अधिनियम 2000 के अंतर्गत एकीकृत मध्य प्रदेश के पेंशनरी दायित्वों का विभाजन दोनों राज्यों की जनसंख्या अनुपात (मध्य प्रदेश राज्य एवं छत्तीसगढ़ राज्य के मध्य क्रम से 48566: 17615 में किया जाएगा) के संबंध में मध्यप्रदेश वित्त विभाग ने परिपत्र क्रमांक एफ 25/202/2000/पीडब्ल्यूसी/चार दिनांक 30/10/2000 जारी किया था, जिसके अनुसार महालेखाकार मध्यप्रदेश/ छत्तीसगढ़ द्वारा अधिनियम की अनुसूची 6 के अंतर्गत एकीकृत मध्यप्रदेश के पेंशनरी दायित्वों को प्रभाजित कर उतरवर्ती मध्यप्रदेश से 73.38 प्रतिशत एवं उत्तरवर्ती छत्तीसगढ़ से 26.62 प्रतिशत की वर्ष 2001 से वसूली की जा रही है पत्र के साथ महालेखाकार मध्यप्रदेश के वर्ष 2002-03 एवं 2022-23 व छत्तीसगढ़ के वर्ष 2002-03 एवं 2023-24 की प्रमाणित प्रतियां संलग्न कर अनुरोध किया है।

राज्य स्तरीय स्वच्छता समग्र समारोह 14 अक्टूबर को होगा भोपाल में

● मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदान करेंगे स्वच्छता सम्मान ● अमृत योजना के अंतर्गत 5364 करोड़ रुपये के कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन

भोपाल (नप्र)। नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा 14 अक्टूबर मंगलवार को भोपाल के रवीन्द्र भवन हंसध्वनि सभागार में 5वां राज्य स्तरीय स्वच्छता सम्मान समारोह एवं कार्यशाला 'स्वच्छता समग्र' का आयोजन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव दोपहर 1 बजे समारोह में उल्लेखनीय कार्य करने वाले नगरीय निकायों को स्वच्छता सम्मान प्रदान करेंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव अमृत योजना के अंतर्गत 5 हजार 364 करोड़ रुपये के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमि-पूजन करेंगे। इन कार्यों में जल-प्रदाय, सीवरेज परियोजनाएं, हरित क्षेत्र विकास और मुख्यमंत्री अधोसंरचना विकास के विभिन्न कार्य शामिल हैं। समारोह में नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय एवं राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी भी मौजूद रहेंगी।

आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास श्री संकेत भोंडवे ने बताया कि कार्यक्रम में स्वच्छता पखवाड़ा पर आधारित विशेष फिल्म एवं स्वच्छता सर्वेक्षण 2025 के डिजिटल पोस्टर का लोकार्पण भी किया जायेगा। कार्यक्रम में नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री संजय दुबे, स्वच्छ भारत मिशन एवं प्रदेश के शहरी विकास के रोडमेप की रूपरेखा प्रस्तुत करेंगे।

लोक अनुष्ठान और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार मनाया जाए गोवर्धन पर्व : मुख्यमंत्री

● गौ-शालाओं और पशु पालकों को आयोजन में बनायें सहभागी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में 21 अक्टूबर को गोवर्धन पर्व लोक अनुष्ठान और सांस्कृतिक परंपराओं के अनुसार मनाया जाए। आयोजन में गौशालाओं तथा पशुपालकों को विशेष रूप से सहभागी बनाया जाए। साथ ही गोवर्धन पर्व पर पशुपालन तथा दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियां दर्ज करने और नवाचार करने वाले उद्यमियों को सम्मानित भी किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ.यादव गोवर्धन पर्व आयोजन के संबंध में सोमवार को मंत्रालय में आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में बताया गया कि प्रदेश की गौ-शालाओं में गोवर्धन पर्व का सामुदायिक आयोजन होगा। गोवर्धन पर्व का मुख्य आयोजन रवीन्द्र भवन भोपाल में किया जाएगा, जिसमें गोवर्धन पूजन, परिक्रमा, अन्नकूट भोग मुख्य होगा। इस अवसर पर पशुचारक समुदायों की कला, बरेदी और ठाट्या नृत्य आदि का प्रस्तुतिकरण होगा। कार्यक्रम में जैविक उत्पादक, दुग्ध उत्पाद, गोबर आधारित शिल्प के स्टॉल लगाए जाएंगे, साथ ही पशुपालन, कृषि, सहकारिता विभाग की योजनाओं की जानकारी देने के लिए विशेष व्यवस्था होगी। इसके साथ ही ग्रामीण आजीविका के लिए दुग्ध उत्पादन और वृंदावन ग्राम योजना के विस्तार के लिए भी गतिविधियों का संचालन होगा। गोवर्धन पर्व पर सभी जिलों में गतिविधियां संचालित की जाएंगी। आंगनवाड़ी केंद्रों में पंचगव्य उत्पाद जैसे घी, दूध, पनीर और दही से बनी सामग्री का वितरण किया जाएगा।

जमीन विवाद से परेशान किसान ने खुद को लगाई आग

● हमीदिया में इलाज के दौरान मौत, परिजन ने कहा-हक मांगने गए थे थप्पड़ मारे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बैरसिया थाना क्षेत्र के ग्राम झकरिया में 55 साल के किसान वाहिद खान ने जमीन के विवाद से परेशान होकर खुद को आग लगा ली। गंभीर रूप से झुलसे वाहिद को परिजन हमीदिया अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां सोमवार सुबह उनकी मौत हो गई।

परिजन के मुताबिक, वाहिद का चचेरे भाइयों से खेत की जमीन को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था। शनिवार शाम वह अपना हिस्सा मांगने रिश्तेदारों के पास गए थे, जहां कथित तौर पर उनकी बेइज्जती की गई और मारपीट भी हुई। इसके बाद वह मानसिक रूप से टूट गए और घर लौटकर खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। वाहिद के भाई असलम खान ने बताया कि विवाद में शामिल लोगों में जहीर, हबीब, हनीफ, शरीफ, असद, सराफत, आसिफ, सादिक, खालिद और गुड्डू खान के नाम सामने आए हैं। उनका कहना है कि भाई सिर्फ अपना हक मांग रहे थे। उन्हें थप्पड़ मारे गए, अपमानित किया गया। बेइज्जती वो बर्दाश्त नहीं कर पाए और खुद को आग लगा ली। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। शव का पोस्टमार्टम हमीदिया अस्पताल में सोमवार को किया गया।